मानव मन्दिर

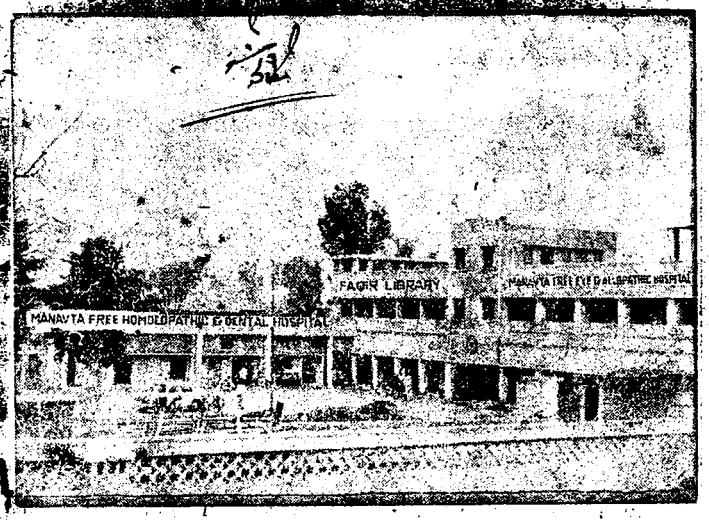
FAQIR LIBRARY
MANAVTA FREE EYE HOMOEOPATHIC HOSPITAL
MANAVTA FREE HOMOEOPATHIC & DENTAL HOSPITAL

FORM IV

(See Rule 8)

Place of Publication	Hoshiarpur
Date of Publication	10th of every month
Periodicity of Publication	Monthly
Printer's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpur
Publisher's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpur
Editor's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Sutheri Road, Hoshiarpur.
Name and address of individuals, who owner the news paper or partners, or shareholders, holding more than one percent of the total capital.	Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

I, M. R. Bhagat hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief,

Signature of Publishers

Dated : 20-6-78

Printed and Published by M. R. Bhagat at Sudhakar Printers, Ashok Nagar, Hoshiarpur for the Faqir Library Trust, Hoshiarpur

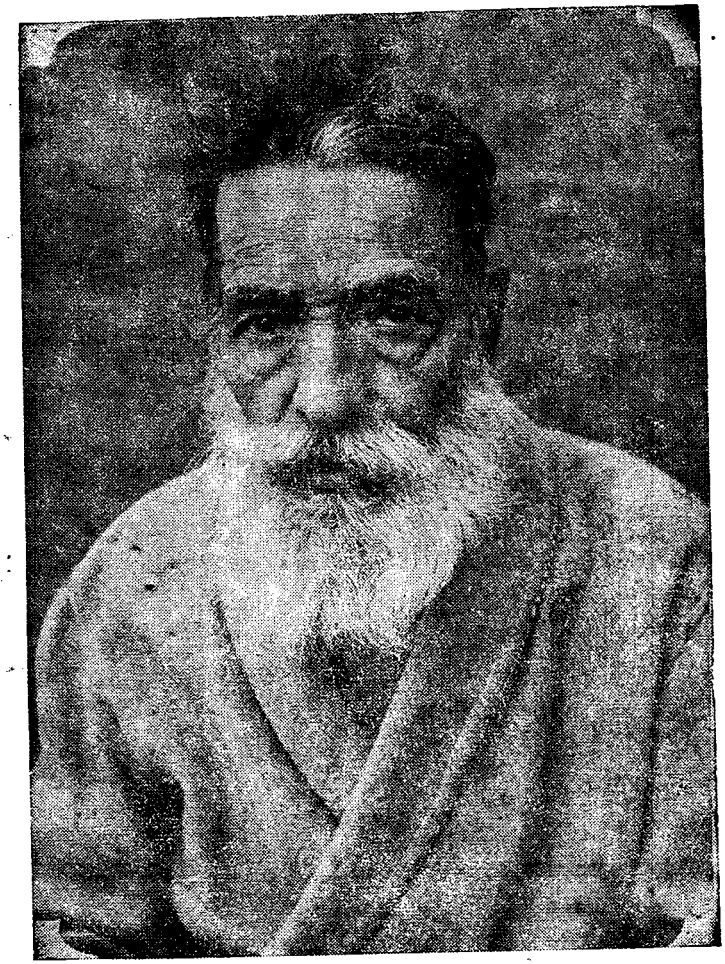

परमसन्त, परमदयाल
फकीर चन्द जी महाराज

पाक्षिक—

मानव मन्दिर

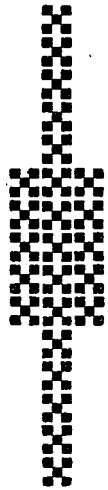

सम्पादक :— एम. आर भक्त
पी. एस. ई (रीटार्यड)

वर्ष ५	बीरवार १० अगस्त १९७८	संख्या ४

सेठ दुर्गादास साहिब

की

प्यारी याद

स्वर्गीय सेठ दुर्गादास जी

दो शब्द

सेठ दुर्गादास साहिब, चण्डीगढ़ दिनांक 7-6-78 रात के $10\frac{1}{2}$ बजे परम धाम सिधार गये। वह हज़ूर परम दयाल जी महाराज के सन 1919 इसवी से साथी थे। सेठ साहिब का इनके साथ पिता पुत्र का भाव था। हज़ूर उनको प्यारी दुर्गियां कह कर पुकारा करते थे। परम दयाल जी महाराज के मिशन में इनका काम सराहनीय है। वह मानवता मन्दिर के स्थापक थे और फकीर लायब्रेरी चेरीटेबल ट्रस्ट के प्रधान थे। उनके देहावसान पर मानवता मन्दिर में सात दिन शोक मनाया गया और मानवता का झंडा आधा झुकाया गया।

मानव मन्दिर का यह विशेष अंक उन्हीं की याद में प्रकाशित किया जा रहा है।

आशा है इस अंक से मानव मन्दिर के पाठकों को जीवन सुधारने और खुशी व आनन्द से गुज़ारने में प्रेरणा मिलेगी।

प्रकाशक :-
मानव मन्दिर

सत्संग परम संत परम दयाल पण्डित फकीर चन्द जी महाराज मनवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक ९-६-७८

एक दिन माटी में मिल जाना,

तेल फुलेल केवड़ा चन्दन, भूषण वसन और काया मंजन,
बृथा हैं सब सोच समझ मन, यह तन भस्म समाना।
चार जना मिल तोहि उठावें, अब घट मरघट ले पहुचायें,
भस्मी भूत कर घर फिर आवें, हंस अकेला जाना।
कोड़ी कोड़ी माया जोड़ी, धन सम्पति और घोड़ा घोड़ी,
बीत गई आयु रही थोड़ी, चेत मैं तोहि चिताना।
लट खोले घर तिरिया रोवे, मात पिता सुत सुध बुध खोवे,
प्राण विहीन खाट नर सोवे, या दिन सब ही आना।
भव सागर में गोता खाया, भोग विषय नर जनम गवाया,
झूठी माया झूठी काया, इन संग क्यों भरमाना।
ची जाती ना म जग पाया, झूठ सांच कह सब ही बुझाया।
ऊंआप फंसा औरन फंसाया, वृथा जनम बिताना।
छिन छिन आयु घटत दिन राती, किस के पूत हैं किस के नाती

मरन समय कोई संग न साथी, तोहि अकेले जाना।
माया फांस गले में डारी, काहू विध उतरे नहीं पारी,
धन दौलत बधु सुत नारी, कोई साथ न जाना।
ध्यानी भये मोह नहीं छूटा, ज्ञानी भये भरम नहीं टूटा।
निस दिन बंधे यम राज के खूंटा, धिक नर पशू समाना।

सेठ दुर्गा दास दो दिन पहले चला गया। १९१९ में यह वसरेवग़दाद में सिगनेलर बन कर गया था। मैं वहां Telegraph Inspector था। मेरा इससे प्रम हुआ। इसने हज़ूर दाता दयाल जी महाराज से नाम लिया था मगर मेरा उसका प्रम था। उसके चले जाने से मैंने सात दिन का सोग मनाना आरम्भ किया। झण्डा भी नीचे कर दिया। क्योंकि इस व्यक्ति ने मानवता मन्दिर की नीव रखी थी इस लिए मेरे साथ इसका बड़ा प्रेम था। यह स्वाभाविक बात है कि जिसपर जो उपकार करता है उसका उस से प्रेम का होना आवश्यक है। मेरे इसके पिता पुत्र के सम्बन्ध थे। इसके मर जाने पर मुझे जो अनुभव पहले था वह पक्का हो गया। इस विचार से अगर मैं सेठ दुर्गा दास को अपना गुरु कहदूं तो मैं ग़लती पर नहीं, क्यों ? आजकल गुरुमत का ज़ोर है। गुरु

की महिमा गाई जाती है मगर जो असली और, सच्चा गुरुमत है उसको पूरी तरह नहीं प्रकट किया गया। कहते हैं, अन्त समय राम, कृष्ण, गुरु या कोई न कोई आकर ले जाता है। मेरे अनुभव में यह ग़लत सिद्ध हुआ। क्यों ? वह स्वर्गवासी हो गया। मुझे पता लगा है कि किसी ने उससे पूछा कि क्या बाबा जी (फकीर लन्द जी) को कुछ कहना सुनना है ? तो उसने कहा कि बाबा जी तो मेरे पास बैठे हैं और मैं तो था नहीं। मुझे तो आशा ही नहीं थी कि वह मर जायेगा। क्यों आशा नहीं थी ? हमारे ज्योतिषि प्यास जी ने कहा था कि पहले इसकी स्त्री मरेगी फिर वह मरेगा। मैं इस विचार से बिल्कुल ही बेचिन्त था क्योंकि ज्योतिष को मैं सच्चा मानता हू।

व्यास भी सच्चा है क्योंकि उसकी पहली स्त्री पहले ही मर चुकी थी। वर्तमान स्त्री उसका दूसरा विवाह है। ज्योतिष तो उसका भी ग़लत नहीं था। इस वास्ते मेरी समझ में यह आया है कि इन्सान को किसी भी लाइन में पूर्ण ज्ञान नहीं है। अगर मुझे यह विचार न मिला हुआ होता तो चाहे कुछ भी

होता मैं अवश्य उसकी बीमारी के समय पर उसको मिलने जाता क्योंकि यह मेरा कर्तव्य था। १९१९ से लेकर आज १९७८ तक अर्थात ५९ साल का हमारा आपस का प्रेम था। उसने मेरी बहुत सेवा की और मन्दिर की भी। इन घटनाओं को सुनकर, देख कर मुझे बहुत वैराग्य हो गया है। अगर धर्म से कोई मेरी आत्मा से पूछे तो मैं सब धर्म पंथ छोड़ गया। इन धर्मों, पंथों और समप्रदायों ने संसार में क्या कुछ विपत्तियें नहीं डालीं। दाता दयाल का आज यह शब्द पढ़ा गया। वह कहते हैं :—

एक दिन माटी में मिल जाना
तेल फुलेल केवड़ा चन्दन, भूषण वसन और काया मंजन,
वृया हैं सब सोच समझ मन, यह तन भस्म समाना,

हम सब ने चले जाना है। मगर हम धर्म या पंथ वाले कुछ न कुछ उपाय करते हैं कि हमें कोई ले जायेगा जहाँ हमने जाना है। कोई कहता है गुरु ले जायेगा, कोई कहता है कृष्ण ले जायेगा, यह ले जायेगा, वह ले जायेगा मगर मुझे यह सिद्ध हो गया कि कोई नहीं ले जाता। इन्सान का अपना ही कर्म विचार और विश्वास उसे ले जाता है। कहां जाता

है ? अफसोस, उस स्थान का पता है मगर वहां ठहरा नहीं जाता। वह जगह क्या है ? जहां, यहां से जो जाने वाला है उसकी अपनी 'मैं' ही समाप्त हो जाती है और यही बात संत कबीर और राधास्वामी दयाल ने अपनी वाणियों में कही है। कबीर साहिब कहते हैं :—

जहां पुरुष तहां कछु नाहीं कहैं कबीर हम जाना।
हमरी सैना जो कोई समझे पावे पद निर्वाणा॥

स्वामी जी जेठ महीने में लिख गये, हम कहां जाते हैं और कहां से आये हैं ?

नहिं खालिक मखलूक न खिलकत,
कारज कारन काज न दिक्कत
राम रहीम करीम न केशो
कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो
यह हमारा आद है और यह हमारा अन्त है।

मगर इस माया के जाल में फंस कर कुछ न कुछ बनते और करते रहते हैं। मैं अपनी ओर देखता हूं कि क्या मैं बरी हूं ? नहीं। मैं भी बरी नहीं हूं। यह मानव मन्दिर और सत्संग कराने का क्या झमेला नहीं है ? यह भी माया है। मगर जब तक

जीवन है हम प्रकृति के कर्म के अधीन काम करने के लिए विवश हैं। मैं रात दिन यही सोचता हूं और देखना चाहता हूं कि क्रियत्मिक रूप से मेरा क्या परिणाम होगा। दुर्गादास कहां गया ? मुझे क्या पता क्योंकि मेरे विचार से इस समय धार्मिक और पंथिक संसार में सच्चाई नहीं है और दाता दयाल ने मुझे आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना इसलिए मैं अपने अनुभव अनुसार जब मुझे यह पता ही नहीं कि दुर्गादास कब मरा और न ही मुझे विश्वास था कि वह मर जायेगा केवल ज्योतिष के विचार से।

यह जितनी पंथों की रोचक और भयानिक शिक्षा है यह ग़लत है। हम गृहस्थी भोले भाले हैं, जो पंथ उठता है हमें अपनी ओर रोचक और भयानक बातें बता कर खींच लेता है। अब क्योंकि अपना राज्य है मेरे जिम्मे कर्तव्य है कि शिक्षा को बदल जाऊं इस लिए कहता हूं कि दाता दयाल ने सच्च कहा है कि वहां अकेले ही जाना है।

एक दिन माटी में मिल जाना।
तेल फुलेल केवड़ा चन्दन, भूषण वसन और काया मजंन,
बृथा है सब सोच समझ मन, यह तन भस्म समाना।

चार जना मिल तोहि उठावें, अब घट मरघट ले पहुचावें,
भस्मीभूत कर घर फिर आवें, हंस अकेला जाना :

मैं दाता दयाल के इस शब्द के साथ सहमत हूं कि हंस ने अकेले जाना है। क्यों ? कि जब दुर्गादास ने कहा कि मैं इस के पास बैठा हुआ हूं मैं तो था नहीं वह जो कहना था कि बाबा जी मेरे पास बैठे हुये हैं वह उस समय माया में फंसा हुआ था, यही एक भेद है जिसके न समझने से हमारा धार्मिक द्वेष, घृणा इस संसार में मौजूद है।

दुर्गियां ! पता नहीं, अगर कहीं तेरी आत्मा है तो सारा जीवन तुम्हें यही कहता रहा हूं और कि अकेले ही जाना है। न किसी गुरु और न सम्बन्धी ने साथ जाना है। अगर मेरे या मेरे मन्दिर के साथ तुम्हें प्रेम है तो उसे छोड़ दो और अपने घर को चले जाओ।

कैसा अज्ञान फैला हुआ है; कोई कहता है देवी आई, कोई कहता है शिव जी आये। कौन आता है। केवल अपना ही भरम और अपना ही विश्वास है ? अगर कोई धर्म है तो असलियत को समझकर अपने आपको जानना है। मैंने जान लिया कि मैं कौन हूं। मैं एक चेतन का बुलबुला हूं। जो उसकी इच्छा है

उसने करा लिया। कहां जाऊंगा ? न मैं पहले था और न आगे रहूंगा। मैंने यह मंदिर लोगों के अज्ञान को दूर करने के लिए बनाया मगर संसार अज्ञान को दूर करना नहीं चाहता।

सब को राधास्वामी

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक ११-६-७८

मन अन्त काल जब आता है ।

धन सम्पति और मान बड़ाई, साथ नहीं कुछ जाता है ।
किसका कौन पुत्र हुआ उस दिन, कौन बन्धु हित भ्राता है ।
कुटुम्ब कबीला काम न आवे, झूठा जग का नाता है ।
वायें तिग्रिया आंसू वहावे, दायें सुत पितु माता है ।
चलते समय न संग हो कोई, हंस अकेला जाता है ।
बस्ती छोड़ मोड़ मुंह सबसे, ऊजड़ ग्राम बसाता है ।
कोई गाड़े कोई माटी मिलावे, कोई आग जलाता है ।
वा दिन की कुछ सुध कर मन में, क्यों भूला भरमाता है ।
जो नहि चेत करे गुरु संगत, रोता और पछताता है ।
काल करम को डगर कठिन है, यम उत्पात मचाता है ।
पंथ न सूझे रात अंधेरी, मारग कौन दिखाता है ।
इस जग में रहना दो दिन का, जो आया सो जाता है ।

राजा रंक भिकारी पंडित, काल सबन को खाता है।
भज गुरु नाम लाग गुरु सेवा, गुरु, संग काज बनाता है।
राधास्वामी चरण शरन बलिहारो, सेवक गुरु, गुन गाता है।

राधास्वामी। सेठ दुर्गादास जो हमारे मानवता मन्दिर के प्रधान थे चण्डीगढ़ में स्वर्गवास हो गये। उसके सिल सिले में व्यवहारिक रीति से शोक मनाने के विचार से हमने अपना मानवता का झंडा भी आधा नीचे कर दिया और सत्संग भी शोक के ही करते हैं। मगर ये तो सांसारिक और रसमी बातें हैं। संसार का व्यवहार है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि यह संसार क्या है? यह ठीक है कि हमने चले जाना है मगर यह क्या है? यह ऊपर का शब्द दाता दयाल का है। वह कहते हैं :-

भज गुरुनाम लाग गुरु सेवा, गुरु संग काज बनाता है।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सेवक गुरु गुन गाता है।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं तूने गुरु की सेवा कौन फकीरचन्द सच्च बता, तेरा क्या काज बना? क्या मैं अपनी आत्मा से ऐसा प्रश्न करने का अधिकार नहीं रखता? जो इच्छा है आप लोग मुझे समझें। मैं न तो गुरु हूं और न ही महात्मा हूं। तुम्हारा

अपना ही विश्वास काम करता है। मगर मैं अपने आपसे पूछता हूं तूने दाता दयाल की यह बाणीसुनी। उन्होंने लिखा है, जब मानव मर जायेगा तो ऐसा ऐसा होगा, कोई साथ नहीं जाता। यह ठीक है मगर आगे लिखते हैं :-

भज गुरुनाम लाग पर सेवा, गुरु संग काज बनाता है।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सेवक गुरु गुन गाता है।

हर एक धर्म पंथवाला यही कहता है कि गंगा चले लाओ, वहां नहाकर पवित्र हो जाओगे, कोई कहता है फलां स्थान पर जाकर नहाओ पवित्र हो जाओगे। कोई कहता है विष्ण की सेवा करो। कोई कहता है शुकल पक्ष में गायको संकल्प करो गुरुमत कहता है कि गुरु के पास जायो। मैं तो गुरुमत में आप आया नहीं, लेकिन मेरा भाग्य था और उसकी मौज थी। मैं नाक कटों में शामिल नहीं हुआ। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं तुमने गुरु का नाम जपा, गुरु को सेवा की, क्या तेरा काम बन गया ? यह एक प्रश्न है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूं। मेरा क्या काज बना ? आप लोग मेरे पास सांसारिक इच्छायें लेकर आते हो, कोई कहता है धन नहीं है, कोई पुत्र मांगता है किसी की लड़की ने पढ़ना है। यह संसार इसी प्रकार का है। हर एक जीव जो इस संसार में आया है अपना

अपना कर्म भोगता है। मेरा काज, मेरी समझ अनुसार जो बना, वह मैं बता सकता हूं।

जब से मुझे यह विश्वास हुआ कि मैं अमरीका अफरीका आध्रा प्रदेश में किसी के अन्तर नहीं जाता। लोग मेरा ध्यान करते हैं, उनके अन्तर मेरा रूप प्रकट होकर किसी को दवाई बता जाता है, किसी को पुत्र दे जाता है. कई लड़कों के परचे हल करवा देता है, किसी को नदी में डूबने से बचा जाता है मेरे तो बाप को पता नहीं होता और न ही मैं किसी के अन्तर जाता हूं। मैंने क्या पाया ? कि जो कुछ भी हम सोचते, अन्तर में देखते या दुखी सुखी होते हैं यह हमारा अपना ही विचार, खेल और मन की कल्पना है। कोई बाहर से नहीं आता जो तुम्हें बचायेगा। गुरु से मुझे क्या मिला ? मुझे पता नहीं कि दाता दयाल को गुरु से क्या मिला जो वह कहते हैं गुरु सेवक गुरु के गुण गाता है। यह दाता दयाल या गुरुमत वाले जानते होंगे कि उनको क्या मिला ? क्या उनका काज बना ? दुर्गादास का क्या काज बना ? मुझे पता नहीं। मैंने जो कुछ जीवन में समझा, समझता रहा : किताबें लिखी। उसने मेरी बहुत

सेवा की अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि वह मर गया, तुम्हें पता है कि वह कहां गया ? तू जानता है कि वह कब मरा ? नहीं। गुरु से काज बनाना क्या है ?

जिस प्रकार वाणियों में लिखा है कि सब संसारी भ्रम में आये हुये हैं। नाम लेलो अन्त समय पर तुम्हें सत्गुरु, सतलोक ले जायेगा, कैसे मानूं ? लोग मरते हैं, मेरा ध्यान करते हैं। मुझे तो पता नहीं होता। फिर वह काज बनाना क्या है ? काज बनाना यह नहीं कि गुरु से नाम ले लो तो काम समाप्त हो गया और तुम्हारा बेड़ा पार हो गया। यह बिल्कुल झूठ और बकवास है। पुरुषोतम दास, मैं अपनी आत्मा से पूछता हू कि तुझे गुरु से क्या मिला ? तू मेरा वसरेवग़दाद का मित्र है। मैं बड़ी सच्चाई से काम कर रहा हूं। मेरा क्या काज बना ? मुझे समझ आ गई कि जो कुछ मेरे मन के अन्तर फुरनायें फुरती हैं, वासनायें और विचार उठते हैं, यह सब कल्पना है। इसमें कोई सच्चाई नहीं। मैं क्यों कहता हू कि कल्पना करते है ? जब लोग मुझे बनाकर मेरे साथ बातें करते हैं और लाभ उठाते हैं लेकिन

मुझे पता नहीं होता तो मैं समझ गया कि यह उनकी अपनी ही कल्पना है। इससे क्या लाभ हुआ ? कि मैं अब मन के चक्कर में नहीं आता। एक तो मेरा यह काज बना।

नरायणदास उसे मिलने गया था। वह बताता है कि उसने दुर्गादास को कहा "बाबा जी को कुछ कहना सुनना है" उसने उत्तर दिया "नहीं" बाबा जी तो मेरे पास बैठे हुये हैं। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तू उसके पास गया था ? मैं नहीं गया। मैंने यह मानवता मन्दिर बनाया। मैं यह काम करता हूं। क्यों करता हूं ? दाता दयाल ने कहा था कि फकीर ! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैं क्या शिक्षा बदलूं ? जो कुछ मैंने समझा कि ऐ बन्दे ! सारी कल्पना तेरे अपने ही मन की है। तू इस कल्पना में फंसा हुआ है और हाय २ करता है, कभी खुश होता है कभी रोता है और कभी कुछ करता है, यह मुझे मिला और मैंने समझा। अब जब मैंने समझ लिया तो जबतक मेरा जीवन है, मैं रहता हूं, मैं कौन हूं ? यह मैं अपने आपसे

पूछता हूं। अगर मैं यह कहदूं कि मैं नहीं हूं और न मेरा मन है तो मैं कुछ तो हूं।

मैं कहता हूं कि मन कल्पना करता है लेकिन मैं तो कुछ हूं। वह हैपना क्या है ? वह मेरे अन्तर वह चीज़ है जो मन को छोड़कर प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। उसका मुझे पता नहीं लगा कि वह क्या है। जब कभी वहां ठहरता हूं तो उस समय क्या होता है ? न वहां गुरु, न संसार और न और किसी चीज़ को याद है। वह एक ऐसी अवस्था आ जाती है। इससे सिद्ध हुआ कि क्या काज बना ?

भज गु नाम लाग गुरु सेवा, गुरु संग काज बनाता है।
राधास्वामी चरण शरन बलिहारी, सेवक गुरु गुन गाता है।

मैंने गुरु की बहुत सेवा की जैसे संसारवाले करते हैं। वे फोटो लगे हुये हैं। मैंने सिंहासन, चान्दी के हुक्के, सोने के ताज और चांदि की थालियें बनाई। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तुझे इतनी गुरु सेवा करने से कुछ मिल गया था ? केवल अज्ञान का आनन्द मिला था। ज्ञान का आनन्द नहीं। अज्ञान का आनन्द मिला था। जिस प्रकार बच्चे खिलौने खेलकर आनन्द लेते हैं वैसा आनन्द मिला। मैंने गुरु

सेवा क्या समझी ? मेरे गुरु तो दाता दयाल हैं मगर आप भी हैं। जब से मुझे यह पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। दाता दयाल भी मुझे शब्दों में यही कहते थे। मेरे नाम जितने शब्द हैं उन सबमें यही संकेत है लेकिन मुझे संकेत का पता नहीं लगता था। फिर इशारे और असलियत को समझने के लिए मुझे यह काम दिया था।

मैंने गुरु की सेवा क्या समझी ? गुरु की संगत में जाकर गुरु की बात को सुनना, समझना, गुनना और उस पर अमल करना यही गुरु सेवा है। संसार के व्यवहार के लिए बेशक इससे अधिक सेवा है मगर परमार्थ के व्यवहार के लिए कुछ नहीं। आजकल तुम देखते हो हमें गुरुमत में शामिल कर लिया गया है लेकिन हमें सच्ची बात किसी ने नहीं बताई। हम लोगों ने आवागवन, दुखों से बचने और सांसारिक इच्छाओं के लिए गुरुओं के घर भर दिये, उनकी बड़ी बड़ी गद्दियें *Air Conditioned* कमरे बन गये। उन्होंने हमें अज्ञान में रखकर मोटर कारें और हवाई जहाज खरीद लिये। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि दुर्गादास को मैंने बसरे बगदाद में नाम

तो दिया था लेकिन वह दाता दयाल का चेला था। वह अठारह साल का बच्चा वहां नौकर होकर आया था। जब दाता दयाल के पास जाता था तो वह कहते थे कि सेठ को बुलाओ : उसने विश्वास किया वह सेठ बन गया। मैंने अपनी ओर से दुर्गादास को सच्चाई बताने में कोई कसर नहीं रखी। तुम्हें भी सच्चाई वर्णन करता हूं कि गुरु की सेवा, गुरु के वचन को मानना है गुरु ने तुम्हें बताने आसमान से नहीं आना है यह गलत है। गुरु तुम्हारे अन्तर रहता है। तुम्हारे बाहर नहीं रहता है। बाहर के गुरु ने तुम्हें असली गुरु का रूप बताना है। दाता ने भी मुझे यही कहा मगर मेरी समझ में नहीं आता था। मैं गुरु को लाहौर या राधास्वामीधाम में समझता था। अब तुम लोगों से पता लगा कि मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता। जो गुरु तुम्हारे अन्तर अभ्यास में सहायता करता है वह तुम्हारा अपना ही विश्वास और मन है। मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तुम देखते हो संसार में इस अज्ञान के कारण क्या कुछ हो रहा है। धर्मों और पंथों के आपस में झगड़े, इसाई मुसलमानों के झगड़े, पाकिस्तान में क्या हुआ ? यह सब कुछ

अज्ञान के कारण हुआ। मुसलमानों ने हिन्दुओं और सिखों के सिर काट। सिखों और हिन्दुओं ने मुसलमानों के सिर काटे। क्यों काटे ? उनका धर्म अलग और मुसलमानों का अलग। वे यह समझते हैं कि हजरत मुहम्मद उनको स्वर्ग पहुंचा देगा। ईसामसीह वाले समझते हैं कि तुम इसामसीह की शरण ले लो तुम सतलोक पहुंच जाओगे और गुरुमत वाले कहते हैं तुम गुरु की शरण ले ला, गुरु तुम्हें वहां पहुंचा देगा। मैंने इस बात को जानने के लिए कि सच्चाई क्या है आयु व्यतीत कर दी इस समय ९२ साल का हो गया हू। आज्ञा थी कि असलियत को समझने के लिए गुरु की सेवा करो। मैंने बहुत सेवा की, लेकिन इस सेवा ने मुझे पार नहीं किया। वह सेवा जिसने पार किया वह समझ है। वह समझ मुझे दाता दयाल से नहीं मिली यद्यपि उन्होंने लिखा है कि गुरु तो तेरे पास है मगर मेरी समझ में नहीं आता था। यह समझ देने के लिए कि गुरु तेरे पास रहता है मुझे यह काम दिया था। माताओ ! बहनों !! भाईयो !!! मैं न गुरु हूं और न महात्मा हूं मैं तुम्हारी तरह इन्सान हूं। गुरु तुम्हारे

अन्तर रहता है। यह समझ मुझे तुम लोगों से आई। जो कुछ तुम्हें मिलता है, तुम्हारी अपनी श्रद्धा, विश्वास और नीयत का फल है और वह गुरु, तुम्हारे अन्तर रहता है। क्यों ? लोग मेरा ध्यान करते हैं, उनके काम वन जाते हैं। पता नहीं हर रोज़ कितने पत्र आते हैं। मुझे कोई पता नहीं होना न मैं कहीं जाता हूं। ऐसी गुरुआई को आग लगे। मैंने मानवता मन्दिर वनाया, दुर्गादास ने इस काम में मेरी सहायता की थी। दुर्गादास मेरा 1919 का प्रेमी था। मेरे ज़िम्में यह कर्तव्य था मैंने उसे कहा था कि दुर्गियां ! तुम अपने दामाद के साथ ठेकेदारी कर लो, तुम्हें हानि नहीं होगी। जो कुछ बचे उसमें से दस प्रतिशत दे देना ताकि मैं दाता दयाल का बुत Statue यहां पर लगा दूं और अपना वर्तव्य पूरा कर दूं। उसने सोलह साल ठेकेदारी की उसे कोई हानि नहीं हुई। इसलिए मैं उसका मान करता हूं।

मैं आज शोक का दिन समझ कर सत्संग दे रहा हूं। जो कुछ तुम्हें, मुझे मिलता है यह हमारे अपने ही कर्म, विचार का परिणाम है। कुछ पिछले और

कुछ इस जन्म के कर्म हैं। अगर काज बनाना चाहते हो। काज बनाने का क्या भाव ? कि इस संसार में दुख सुख न सहो, वापिस न आओ और जन्म न लो जब तक तुम जन्म लेते रहोगे, तुम बच नहीं सकते। न मैं बच सकता हूं न सत बचे। क्या संतों के लड़के नहीं मरे। क्या संत बीमार नहीं हुये। क्या संतों का अपमान नहीं हुआ ? सब का हुआ। काज बनाना क्या है ? इस संसार में दिल न लगाओ। मैं उत्साह पूर्वक कहता हूं कि मैं भी पापी रहा हूं। हम संतान पैदा करते हैं Uncalled for children बच्चे पैदा होते हैं। क्या हम सोचते हैं कि स्त्री पुरुष के मेल से जो बच्चे पैदा होंगे उनका क्या परिणाम होगा ? तो क्या हम ज़ालम नहीं ? क्या पता जो बच्चा पैदा होगा, वह टी-बी से मरेगा, उसे कैंसर होगा या कैद होगा या प्रधान मंत्री बनेगा ? किसी को कुछ पता नहीं। हम सब दोषी हैं। अब दाता दयाल जी की ज़बानी गुरु का रूप सुनो।

गुरु है तेरे पास फकीरवा, गुरु है तेरे पास !

मैं तो उन्हें गुरु समझता था और पूजा करता था। उनकी सेवा करता था, धन देता था, मत्था

टेकता था और नाक रगड़ता था लेकिन वह मुझे कहते थे कि भई ! गुरु तेरे पास है। मैं ऐसी बुद्धि वाला था कि यह बात मेरी समझ में नहीं आती थी।

त्याग भरम विकार मन का, छोड़ जग की आस।
आस कर सतगुरु चरण की सबसे होय निरास।

हम गुरु के चरण ये पांव समझते रहे। मैंने ये पांव बहुत धो धो कर पीये। क्या इन पावों को धोने से मुझे कुछ मिल गया ? आनन्द और खुशी मिली लेकिन काम नहीं बना। गुरु के चरण प्रकाश हैं। जो आदमी संसार की इच्छा रखता है। अगर वह चाहे कि वह किसी को भी गुरु मान ले और वह उसका बेड़ा पार कर देगा, नहीं कर सकता ! नहीं कर सकता !! नहीं कर सकता !!! पुरुषोत्तम दास ! समझता है ! सबकी आस छोड़नी पड़ेगी। जो जग की आशा नहीं छोड़ता चाहे उसने लाख भक्ति की हुई है। जो अपने अन्तर प्रकाश में नहीं जाता उसका काज नहीं बनता क्योंकि प्रकाश ही गुरु के चरण हैं मुझे स्वयं पता नहीं कि दुर्गादास का क्या परिणाम हुआ अगर वह प्रकाश और शब्द में नहीं गया तो

उसे दूसरा जन्म अवश्य मिलेगा ! कोई रोक नहीं सकता अगर मेरा या दाता दयाल का रूप उसे लेने गया तो फिर भी उसे जन्म लेना पड़ेगा। विज्ञान अनुसार हजूर राय सालिगराम साहिब के कहने अनुसार, बाबा सावन सिंह और हिन्दु शास्त्रों के अनुसार उसे अवश्य जन्म लेना पड़ेगा, बच नहीं सकता।

मैं जानता हूं कि मैं ऊंचा बोलता हूं। आपको इसके सुनने की कोई आवश्यकता नहीं मगर आखिर सबने एक दिन यहां से चले जाना है। यह कोई नहीं सोचता कि हम अपना जन्म बनालें। जब मुझे विचार आता है कि किसी स्त्री के पेट के अन्तर मेरा सिर नीचा और टांगे ऊंची होंगी तो मेरी जान कांपती है। पता नहीं कि मैं पार जाऊंगा या नहीं जाऊंगा मगर मुझे मार्ग मिल गया वह मार्ग क्या है ? जगत की आशा त्यागो। संसार में काम करो मगर उसमें फंसो नहीं। गुरु के चरण प्रकाश है, प्रकाश को पकड़ो यही सनातनधर्म और सब कहते हैं। दाता दयाल मुझे समझाते थे।

गुरु तो तेरे पास फकीरवा, गुरु तो तेरे पास।

त्याग भरम विकार मन का छोड़ जग की आस।
आस कर गुरु चरण की सब से होय निरास।

लोग बाणियें पढ़कर यही करेंगे। गुरु धारण करके उसकी टांगें दबाते रहेंगे, पांव धोकर पीते रहेंगे और क्या करेंगे ? यद्यपि गुरु के चरण प्रकाश है। हजूर महाराज राय सालिगराम साहिब जिन्होंने राधस्वामीमत चलाया है। अपनी प्रेमवाणी में साफ लिख गये कि गुरु शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल हैं और उनके चरण प्रकाश है। हमारे हां क्या है ? भर्भवः स्वः महः जनः तपः सत्यं तत सवितुर्वरेणियम भरगो देवस्य, धी महि धिओ योनः प्रचोदयात। आप लोग मेरे पास आते हैं। कई मुझे गुरु मानते हैं मगर मैं वह गुरु हूं जो अपने जाल में नहीं फंसाना चाहता, तुम्हें सच्चे गुरु का पता देता हूं मगर तुम लोग मेरे पास धन और पुत्र मांगने के लिए आते हो जो कुछ तुम्हें मिलना है तुम्हारे कर्म का फल मिलना है। तुम कर्म करो। यह लड़की पठानकोठ से आई है। इसकी आर्थिक दशा बिगड़ गई है। मैंने इसे कहा कि ध्यान किया कर। कहती है मूर्ती नहीं बनती और न ध्यान लगता है। भई ध्यान नहीं बनता तो मैं क्या

करूं, सिर मंडवाऊं। मैंने कुछ नहीं देना जो कुछ तुम्हें मिलना है तुम्हारे अपने ही विचार का फल है। इस वास्ते जो आदमी ध्यान करते हैं, मैं नहीं कहता कि गुरु का ध्यान करो, चाहे राम, चाहे कृष्ण, चाहे लक्ष्मी, चाहे दुर्गा का करो जैसा भी मन चाहे ध्यान करो। हिन्दु शास्त्र ग़लत नहीं थे, जिन्होंने धन के लिए लक्ष्मी और विद्या के लिए सरस्वति का ध्यान बताया था। इस प्रकार अलग-2 देवता रखे गये थे। तुम्हें जो कुछ मिलना है अपने कर्म का फल मिलना है। किसी ने कुछ नहीं देना। गुरु ने तुम्हें ज्ञान देना है। न इसका ध्यान बनता है और न इसके पती का ध्यान बनता है। अरे भई । अगर तुम्हारा ध्यान नहीं बनता तो मैं क्या करूं तुम्हें एक बात बताता हूं कि जीवन में एक जगह विश्वास रखो उसका अपने अन्तर रूप बनाओ। जो कुछ अन्तर से मांगोगे मिलता रहेगा। मैं नहीं कहता कि मेरा ध्यान करो, वासना लेकर भ्रूमध्य में बैठो। जो आदमी अभ्यास करते हैं, अगर उनकी वासना ग़लत है तो वे गिर जायेंगे और दुखी होंगे क्योंकि उनकी आशायें और विचार ठीक नहीं हैं। दाता मुझे फरमाया

करते थे लेकिन अब तुम लोगों से पता लगा कि गुरु के चरण क्या हैं। मैं तो सारा जीवन बाहर के चरण धोकर पीकर मर गया। उसमें मुझे खुशी और आनन्द मिलता था। संसार में प्रसिद्ध हो गया कि बाबा फकीर बड़ा भक्त है। जब मैं धाम में जाता तो हल्ला पड़ जाता कि फकीर आ गाया। क्योंकि मैं बाहरी आरतियें करता था। क्यों ? क्योंकि संसार बाहरी कामों को देखता है। जो बाहर में दान देता है, अन्तर में चाहे वह चार-सो-बीस करे, संसार में वह प्रसिद्ध हो जाता है। यह काम अन्तर का है। मैंने आप को बता दिया कि गुरु के चरण प्रकाश हैं।

पता नहीं दुर्गादास कहां गया। मैं स्वयं अफसोस करता हूं कि मैं कुछ न कर सका। उसने मुझपर बहुत उपकार किया हुआ है। १९१९ से मेरे साथ लगा हुआ था। बसरेबगदाद में खाना बनाता था। अनेक प्रकार की सबजियें बनाता था। मेरे पास कलर्क रहा और मेरे अधीन रहा। यहां आकर बीस बाईस हजार तो पहले दिया। उसके बाद ३० रुपये मासिक मंदिर को और चालीस रुपये मासिक मुझे देता था।

मैं इस धोखे में रहा कि ज्योतिषि ने कहा था कि इसकी आयु अभी समाप्त नहीं हुई। पहले इसकी स्त्री मरेगी फिर यह मरेगा। यह भी झूठ नहीं है क्योंकि उसकी पहली स्त्री मर चुकी थी। मगर इसने बिना सोचे समझे बात की। मैं उसके बीमार होने पर उससे न मिल सका क्योंकि ऐसा विचार मिला हुआ था कि वह अभी नहीं मरेगा लेकिन वह मर गया।

तेरे मन में तेरे तन में. तेरे स्वामों स्वांस।

वह कहते हैं गुरु तेरे मन में तन में है और स्वासों, स्वांस है। मैं सारी आयु ढूंडते ढूंडते मर गया कि गुरु कहां है। अगर मैं यह कहू कि मेरे मन के अन्तर दाता दयाल का रूप प्रकट हुआ और वह रूप गुरु, है तो यह गलत है क्योंकि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है लेकिन मैं नहीं होता। फिर गुरु कौन है। ऐ इन्सान! वह तेरा अपना ही आप है और अपनी ही ज़ात है और वह तू आप ही है। यह सच्चाई है। मगर लोग इस सच्चाई को सुनने के लिए तैयार नहीं और न यहां कोई ठहर सकता है:—

तेरे मन में तेरे तन में, तेरे स्वासों स्वांस।
गुरु बसे दिन रात प्यारे, धर चरण विश्वास।

जिस समय यह शब्द उन्होंने लिखा उस समय मुझे समझ नहीं थी। अब मैं सोचता हूं कि मेरे मन में गुरु कौन है ? अगर मैं दाता दयाल की मूर्ती को अपने अन्तर बनाकर अपने सामने रख लेता हूं तो वह गुरु तो नहीं है। क्यों कहता हूं कि वह गुरु नहीं है ? जब लोग मुझे गुरु समझ कर अपने अन्तर मूरत बना लेते है और अपने काम करा लेते हैं लेकिन मैं नहीं होता तो फिर मैं कैसे मानूं कि गुरु कौन है। ऐ इन्सान ! गुरु तेरी अपनी जात है। मुझे यह पता तुम लोगों से लगा। अगर मैंने वही काम करना होता जो दूसरे महात्मा करते हैं तो मुझे मानवता मंदिर बनाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। मैं किसी डेरे वाले के साथ मिल जाता, अभ्यासी तो था ही। जितनी इच्छा होती उनसे धन ले लेता। जिस तरह वह चाहते उनके नाम का प्रौपेगण्डा कर देता।

गुरु बसे दिन रात प्यारे, धर चरन विश्वास।
गुरु नहिं तीरथ वरत में, गुरु न योग अभ्यास।।

ढूड अपने हृदय में नित, वहां उनका वास।

मैंने सारा जीवन ढ़ूडा। आप लोगों के अनुभवों ने मुझे विश्वास करा दिया कि जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट होता है वह मेरी कल्पना है। फिर गुरु कौन हुआ ? गुरु मेरी और तुम्हारी अपनी जात है। मगर यह समझ हर आदमी को नहीं आती। आज दुर्गादास के शोक में ज़ब्द था।

मन अन्त काल जब आता है।
धन सम्पति और मान बढ़ाई, साथ नहीं कुछ जाता है॥
भज गुरु नाम लाग गुरु सेवा, गुरु संग काज बनाता है॥

मैं आप अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तूने अपना काज बनाया ? अगर बनाया तो क्या बनाया ? अगर गुरु की सेवा ताज बनाने और चीजें देने से सिवाय आनन्द के कुछ मिल जाता तो मैं मान लेता कि यह गुरु की सेवा है। गुरु की सेवा, गुरु की बात को समझना, गुनना और विचारना है। यह शब्द निकला। अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तेरा काज बन गया ? हां। बन गया। तुम लोग मेरे सच्चे सत्गुरु सिद्ध हुये जब मुझे आप से पता लगा कि

मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर जितनी फुरना होती है या जो कुछ भी मैं सोचता हूं यह मेरी कल्पना है। जब यह विश्वास हो गया कि मेरी कल्पना है तो फिर मैं कल्पना में तो फसूंगा नहीं। आगे क्या है ? आगे शब्द और प्रकाश है। जो चीज़ प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वह मैं हूं। अगर मेरी यही दशा अन्त समय पर भी रही तो मेरा काज बन गया। काहे का काज बना ? न पहले मेरी 'मैं' थी और न बाद में रहेगी। मेरी समझ में यह आया है।

मैंने आज दुर्गादास के शोक में तुम्हें सत्संग करा दिया। मैंने जो कुछ प्राप्त किया वह कह सकता हूं। आप ओगों की कृपा से मुझे शान्ति मिली और मेरे भ्रम समाप्त हो गये जब से मुझे विश्वास हुआ कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, लोग मेरा रूप बनाकर काम ले लेते हैं तो सिद्ध हो गया कि जितने भी मत मतांतर हैं ये सब मनमत हैं। मन के चक्कर से नहीं निकले। भारद्वाज, आप आये हो। आप निवृति मार्ग चाहते हो। निवृति मार्ग में सारे सहारे

छोड़ने पड़ते हैं। कल के सत्संग में कबीर साहिब का एक शब्द था।

उत्त ते कोई न आया, जासे पूछूँ जाये।
इत ते सब कोई जात है भार लदाये लदाये।
इत ते सत्गुरु आया जाकी बुद्धि मति धीर।
भव सागर के जीव को खे लगावे तीर।
हम तो चले अगम पुरी टारे टूरे टाट।
आना हो तो आइये सूली ऊपर बाट।
मैं भारद्वाज को कह रहा हूं सूली ऊपर बाट।

वह कहते हैं अमरपुरी चला हूं। किस तरह? टारे टूरे टाट अर्थात सब सहारे छोड़े जाता हूं फिर सूली ऊपर घर क्या? सूली में क्या होता है? जब आदमी को सूली पर चढ़ा देते हैं तो नीचे से तखता निकाल लेते हैं। उसकी टांगों और हाथों को कोई सहारा नहीं रहता। अपने घर वह जा सकता है जो किसी दूसरे का सहारा नहीं लेता। जब आदमी वहां पहुंच जाता है तो गुरु का सहारा भी छूट जाता है। गुरु तो अपना आप है दूसरा कोई नहीं। दूसरा होता तो मैं मान लेता। मैं दूसरा समझता था। मैं समझता था कि गुरु लाहौर या

धाम में है यह काम मुझे इसलिए दिया था कि मुझे असली गुरु का पता मिल जाये।

आप गृहस्थियों को न मुक्ति की इच्छा है और न किसी और चीज़ की। संसारी बातें सुन लो। तुम्हारे विचार में शक्ति है। आप अपने अन्तर अपनी वासना को रखकर ध्यान किया करो। मैं नहीं कहता कि तुम मेरा ध्यान करो लेकिन एक का करो और एक *Pose* का करो। चाहे राम, चाहे कृष्ण, चाहे देवी और चाहे देवता अर्थात एक का ध्यान करो। अगर तुम्हारी मनोकामना पूरी न हो तो मेरी फोटो पर जहाँ फूल चढ़ाते हो वहां जो इच्छा हो करो। यह नियम है। मैं लोगों को नाम क्यों नहीं देता ? क्योंकि अगर उनके मन की वासना गलत होगी तो वह ध्यान करने से बढ़ जायेगी और उनकी हानि होगी। साधारणतया कोई भाई का शत्रु, कोई चाचे का शत्रु है, कोई अपनी स्त्री से अनबन रखता है, कोई कामी और कोई लालची है इसलिए मैं नाम नहीं देता। नाम अधिकारी को मिलना चाहिए जो आदमी अनाधिकारी को नाम देता है, वह गुरु नहीं है। इन गुरुओं ने हमें नाम

नहीं दिया, अपने नाम के लिए नाम दिया है। एक पंथ कहता है कि मांस भी खाओ और शराब भी पीओ, जहां इच्छा है जाओ, किसी की स्त्री किसी के साथ फिरे। उसका क्या परिणाम निकला ? जो लोग ये बातें चाहते थे इकट्ठे हो गये इसी प्रकार मैं किसी को कह देता हूं कि तेरे पुत्र हो जाये उसके पुत्र हो जाता है। वह समझता है कि बाबा बड़ा करनी वाला है, आकर सेवा शुरू कर देता है। लेकिन मैं आपको शपथ पूर्वक कहता हूं कि मैं कुछ नहीं करता। जो कुछ करता है तुम्हारा मन विश्वास और श्रद्धा करती है। मैं यह नहीं कहता कि मुझपर विश्वास रखो, जहां तुम्हारी इच्छा है वहां विश्वास रखो।

अगर संसार से पार जाना चाहते हो तो यह मार्ग है। वहां तो मन ही नहीं है कैसे पहुचोगे। जबतक मन से परे नहीं जाते वहां नहीं पहुंच सकते। आज आपको बहुत सत्संग करा दिया। आपको नहीं कराया अपने आपको कराया है। अपनी आत्मा से पूछता हू फकीर चन्द ! तुझे वह गुरु मानता था।

उसने तेरा मन्दिर बनाया। तेरी सहायता भी करता था। जब यहां खुशी राम के हां से नौकरी छूट गई तो मैं अलीगढ़ चला गया। लड़का अभी काम पर नहीं लगा था, तो मैंने उसे लिखा कि मैं आ गया हूं पीछे घर पर मेरी स्त्री है तुम बीस रुपया महीना भेज दिया करो। दुर्गादास ने बीस रुपया महीना भेजना शुरू कर दिया। फिर जब मेरी स्त्री बीमार हो गई तो नौकर रखना पड़ा तो उसने बीस की वजाये चालीस रुपये कर दिये। मैं महसूस करता और सोचता हूं कि तूने गुरु बनके उसके साथ क्या किया ? क्या तू उसकी रूह को ले गया ? क्या तुम्हें पता है कि वह कब मरा ? मुझे पता नहीं। मैं ऐसा गुरु नहीं बनना चाहता जो पाखण्ड जगाकर, तुम लोगों की आंखों में मिट्टी डालकर तुम लोगों का धन लूं और अपनी सम्पत्ति बनाऊं। यह परोपकार का काम है। तुम्हारी खुशी हो तो सत्संग में आया करो अगर न हो तो मत आया करो। तुम्हारी खुशी है मेरी किताब पढो अगर नहीं तो न पढ़ो। अगर खुशी से मंदिर को कुछ देना चाहो ता दे जाओ

वरना मत दो। मैं स्वयं डरता हूं कि मेरा क्या परिणाम होगा। मैं मरूंगा तो कहां जाऊंगा।

मैं यह नहीं कहता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही सोलह आने सच है। सच्चाई की खोज में मेरी आयु व्यतीत हो गई। मैं बानवे साल का हो गया हूं। मैं अपनी जिम्मेवारी को महसूस करता हूं। आप लोग मेरे पास आते हो, मुझसे कुछ आशा रखते हो। मेरे पास सिवाय शुभ भावना के और कुछ नहीं सबको *good wishes* देता हूं। अपने जीवन को साफ रखकर जाना चाहता हूं। कोई धोखा फरेब की बात नहीं अगर *good wishes* में कोई शक्ति है और तुम्हारा विश्वास है तो तुम्हारा भला हो जायेगा। अगर तुम यह कहो कि मैं कोई जादूगर हूं या मैं किसी के अन्तर जाता हूं तो यह ग़लत है। मेरी तो अपनी आंखें खुल गई। अब मैं यह कहता हूं कि इन वर्तमान धर्मों और पंथवालो ने हमें अज्ञान में रखकर मूर्ख बनाकर लूटा है। मैं इस परिणाम पर आया हूं कि इन्सान का अपना ही मन है जो सब ओर चक्कर मारता है। वह समझता है कि कोई राम कृष्ण या

कोई गुरु आता है। सब पाखण्ड का जाल और धोखा है। कोई किसी के अन्तर नहीं जाता। मैंने अभी बताया कि दुर्गादास मर गया लेकिन मुझे पता नहीं और मैं सोचता था कि वह अभी नहीं मरेगा। अगर मुझे ज्योतिषि से यह विचार न मिला हुआ होता कि जबतक उसकी स्त्री नहीं मरेगी वह नहीं मरेगा तो मैं अवश्य जाता लेकिन उस समय मुझे यह विचार नहीं आया कि उसकी पहली स्त्री मर गई है। जिस आदमी ने मुझपर इतना उपकार किया है क्या मैं उसकी बीमारी का पता भी लेने नहीं जाता। मुझे जाना चाहिए था। मगर मैं तो इस भ्रम में रहा कि वह अभी नहीं मरेगा।

आप लोग मेरे कर्म काटने में सहायता करते हो। आपका धन्यावादी हू मगर मैं सच्चो बात कहता हू। आज जो शब्द तुम्हें सुनाया, गुरु को अपने पास समझा और जो कुछ मांगना हो उससे अपने अन्तर मांगा करो। अपने अन्तर रूप बनाकर मांगा करो। न मिले तो मैं जिम्मेदार हूं मुझे पकड़ो। लोग मेरा ध्यान करते हैं, जो मांगते

हैं उन्हें मिल जाता है लेकिन मेरे बाप को पता नहीं होता। न मैं किसी को कुछ देता हूं और न कुछ जानता हूं।

सब को राधास्वामी

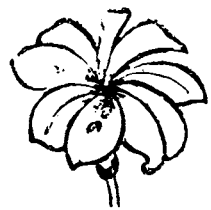

सत्संग परम सत परम दयाल पण्डित फकीर चन्द जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक ९-६-७८

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं।
ता दिन तेरे तन तरवर के, सबै पात झरि जैहैं।
या देही को गर्व न कीजै, स्यार काग गिध खैहैं।
तीन गति तीन विष्ट किर्म ह्वै, नातर खाक उड़ै हैं।
कहं वह नैन कहां वह सोभा, कहं वह रूप दिखै हैं।
जिन लोगन ते नेह करतु है, तेई देखि घिनै हैं।
घर के कहत सवेरे काढ़ो, भूत होय धरि खैहैं।
जिन पूतन को बहु प्रतिपाल्यों देवी देव मनै हैं।
तेइ लै बांस दियो खोपरी में, सीसफोरि बिखरै हैं।
अजहूं मूढ़ करे सतसंगत, संतन में कुछ पै हैं।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आवागवन नसै है।
काया बौरी चलत प्रान काहे सोई।
काया पाय बहुत सुख कीन्हो, नित उठि मलि मलि धोई।

सो तन छिया छार होई जैहै, नाम न लेहै कोई।
कहत प्रान सुन काया बौरी, मोर तोर संग न होई।
तोहि अस मित्र बहुत हम त्यागा संग न लीन कोई।
ऊसर खेत कै कुसा मंगाये, चाचर चवर कै पानी।
जीवत ब्रह्म को कोई न पूजै, मुरदा कै मेहमानी।
सिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, सेस सहस मुख होई।
जो जो जन्म लियो बसुधा में, थिर न रहो है कोई।
पाप पुन्य हैं जनम संघाती, समझ देखु नर लोई।
कहत कबीर अभिअंतर की गति, जानत बिरले कोई।

राधास्वामी। दुर्गादास के शोक के सिलसिले में ये शब्द पढ़े जाते हैं। शब्द मैंने और आपने सुने। आपके दिल में क्या विचार आया, मुझे पता नहीं मेरे दिल में क्या विचार आया? कबीर साहिब कहते हैं संतों की संगत करो कुछ पाओगे।

अजहूं मूढ़ करै सत संगत, संतन में कछु पै है।

मेरी सारी आयु संतों के दरबार में बीत गई। मैं भी अब संत बनता हूं। लोग परम संत परम दयाल पण्डित फकीर चन्द जी लिख देते हैं। मेरे अपने दिल में विचार आता है कि क्या संतों की संगत करने से आदमी नहीं मरेगा? क्या बीमार

नहीं होगा, दुख नहीं उठायेगा ? उठायेगा । पिछले बड़े बड़े संतों और वर्तमान संतों ने दुख उठाये। आजकल एक और फिरका और पंथ है ! उसके गुरु को मार्ग में कष्ट हुआ और उसे वापिस दिल्ली ले गये । वहां उनका औपरेशन हुआ । मैंने बड़े बड़े संतों और महात्माओं की दशा देखी । उनकी बुरी दशा देखकर दिल उदास हो गया । पुरुषोत्तमदास, मेरा अत्मा बिल्कुल उदास हो गई ।

संत क्या देते हैं ? यह एक प्रश्न है । वह कहते हैं, कि संतों के दरवार में कुछ पाओगे । क्या बनोंगे ? आवागवन नसाओगे । मैं सोचता हूं कि क्या संतों के दरवार में तुम्हारा आवागवन समाप्त हो जायेगा ? जबतक तुम संतों की बात को नहीं समझोगे यह आवागवन समाप्त नहीं होगा । पहली बात तो मैं यह समझता हू जो मैं अमल करता हू कि यह संसार दुख की खान है । इससे दिल मत लगाना । मगर हम क्या करते हैं ? संसार में फंसे हुये दुख उठाते हैं, वच्चे पैदा करते हैं । आप विपत्ति सहते हुये क्या करते हैं ? हमारे पोता नहीं है, पुत्र

नहीं है। यह क्या खेल है ? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा : मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं क्यों फकीर चन्द ! तूने संतों के दरवार में जाकर क्या पाया ? पहली चीज़ मैंने यह प्राप्त की कि जब संत साधु महात्मा दुखों से न बच सके तो हम कैसे बचेंगे ? इसका भाव यह है कि हम इस संसार में अपने कर्मानुसार आये। इस संसार में दिल लगाना महांपाप है और बच्चे पैदा करना सबसे बड़ा पाप है। हम स्वयं तो आवागवन से बचने के लिए गुरुओं के पास जाते हैं लेकिन पोते, पोतियों के लिए इच्छा करते है। उनके साथ क्या होगा मुझे क्या पता। सारा संसार जानता है कि क्या होगा।

मेरा हृदय सत्यप्रिय है। मुझे अपना पता नहीं कि मेरा क्या परिणाम होगा। मेरा आवागवन जायेगा या नहीं जायेगा मुझे कोई पता नहीं। मैं कुछ नहीं कहता। मुझे रास्ते का तो पता लग गया मगर कई बार मैं लाख यत्न करता हुआ भी मन से अलग नहीं हो सकता। यह और बात है कि मैं बुरे

विचार न सोचूं । दुर्गा दास की मौत ने मेरे मस्तिष्क को बहुत हिलाया । अब यह वर्तमान गुरुमत मुझे एक ढौंग और धोखा दिखाई दिया । लोग कहते हैं. अन्त समय गुरु ले जाता है । मुझे पता नहीं कि उसकी जान कब निकली, न मैं उसे लेने गया । यद्यपि किसी ने मुझे बताया कि मरने से एक दिन पहले किसी ने दुर्गादास से पूछा कि महाराज जी को कुछ कहना है उसने कहा कि वह तो मेरे पास बैठे हैं कुछ नहीं कहना ।

मैं आप दुखी हूं । मैं अपने आपको क्रियत्मिक जीवन (Practical life) में लाना चाहता हूं । जहां से मैं आया हूं वहां जाना चाहता हूं मुझे रास्ता मिल गया लेकिन वहां ठहरा नहीं जाता, फिर गिर जाता हूं । अपने कोई वश नहीं अब तो यही मेरे पास रह गया । अब भी यही दशा थी जब मैं समाधि में था, मालिक ! तेरी इच्छा पूर्ण हो । पुरुषोत्तमदास, मैं क्या करूं. यह मेरे जीवन का अनुभव हो रहा है । आप मेरे लंगोटिए मित्र हैं । उस समय कहा करते थे कि मास्टर जी. कुछ बताओ मैं कहा करता था कि जब पहुचूंगा तो बताऊंगा अब बताये जा रहा हूं

कि अपने वश में कुछ नहीं। मैं बहुत यत्न करता हूं कि वापिस न आऊं लेकिन फिर आ जाता हूं। मैंने जो कर्म भी किये हैं वे भोगने हैं। सब गुरुओं ने अपने अपने कर्म भोगे। क्योंकि मेरे जिम्मे शिक्षा को बदलने की आज्ञा थी। मुझे पता नहीं कि उन्होंने शिक्षा को बदलने की आज्ञा क्यों दी थी। मैं कहता हूं कि ऐ बन्दे! जो कुछ तुझे मिलना है तेरे कर्मों का फल मिलना है। अपनी नीयत को साफ रख। अगर तेरी नीयत साफ नहीं है तो तू कर्म के चक्कर से नहीं बच सकता। मैंने यह समझा है।

यह माई मुझपर विश्वास करती है। मुझे स्वार्थ व अहंकार की आवश्यकता नहीं है। मैं अपने आपको साफ करता हूं। क्यों भई फकीर चन्द, क्या तू इनको कुछ दे सकता है? पुरुषोत्तम दास! यह एक प्रश्न है जो मेरे अन्तर पैदा होता है। क्या मुझमें शक्ति है? मेरे पास कुछ नहीं। जो कुछ तुम्हें मिलता है तुम्हारे अपने ही कर्म हैं। जो तूमने किया है वह भुगतोगे। उससे कोई बचाव नहीं। ये संत, महात्मा और अवतार भी कर्म के फल से न बच सके। दाता ने

कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। मैंने क्या समझा ऐ इन्सान! अपनी नीयत को साफ रख। अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी के साथ धोखा फरेब चार-सौ-बीस मत कर ताकि तेरे बुरे कर्म न बनें। मैं आवागवन से बचने का रास्ता जानता हूं। एक दिन पहले मैंने सत्संग में संसार वालों से कहा था कि संसार से अपना मन मत लगाओ फिर वहां पहुंचोगे।

मगर पता नहीं मेरे जीवन में क्या हो। जब मरने लगूं तो मेरे साथ क्या हो। दुर्गा दास की मौत ने मुझे बहुत कुछ सखाया। इन गुरुओं, महान्माओं और धर्मों ने हमारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। मैं निर्भय होकर कहता हूं कि हमें सच्चाई नहीं बताई। मैंने यह समझा है। क्या? कि ऐ मानव! अपनी नीयत को साफ रख। प्रकृति के नियमों के विरुद्ध न चल ताकि तेरा बुरा कर्म न बने। अब मैं चाहता हूं कि मैं वापिस न आऊं। क्या मरना या शरीर से निकल जाना मेरे वश में है? मैं नहीं निकल सकता। क्या करूं? हां अगर

संखिया खालूं तो शायद निकल जाऊं। मगर कहते हैं कि आत्महत्या करने से मुक्ति नहीं होगी।

आज शोक का दिन था। सबने जाना है जैसा कि दस्तूर बना हुआ है। विशेषकर पुरुषोत्तमदास मास्टर मोहन लाल और मन्शीराम का बुढ़ापा है। पता नहीं दो साल, चार साल या दस साल और जीवित रहें। आखिर चले जाना है। यहाँ पर किसी ने नहीं रहना। अगर हो सके तो अपनी नीयत को ठीक रखो। "संतन में कछु पैहैं" कबीर किसी को क्या देता होगा, मुझे पता नहीं। कबीर अपने चेलों को देता होगा मुझे पता नहीं। मुझे क्या मिला? संतों से क्या पाइए? संतों से समझ, ज्ञान और अनुभव मिलता है जिसपर अमल करने से इन्सान का जीवन सुख से व्यतीत हो जाता है और उसे चिन्ता नहीं सताती। तुम लोग आकर कहते हो मैं बीमार हूं अरे! इन संतों का हाल देखो। इनके साथ क्या हुआ। किसी को कोई बीमारी है। यह क्या है? हम लोग पागल होकर संतों के पींछ २ फिरते हैं कि ये हमारा बेड़ा पार कर देगें। तुम भूल में हो। संतों ने केवल तुम्हें सच्ची बात, सच्चा भेद बताना

है। कोई संत किसी के दुख को दूर नहीं कर सकता। बिल्कुल सच्ची बात है। दाता दयाल की धाम उजड़ गई वह कुछ न कर सके। वह भी दस पंदरह दिन बहुत बीमार रहे। यह गुरुओं का हाल देख लो। किस लिए टक्करें मारते फिरते हो। किसी सन्त के दरवार में जाकर समझ, ज्ञान और जीने का भेद सीखो। उसपर अमल करने से तुम्सारा बेड़ा पार होगा।

कई स्त्रियें अपने बच्चे लाती हैं। मैं उन्हें प्यार दे देता हूं तुम्हारा अपना ही विश्वास है, कोई किसी को कुछ नहीं देता। मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। जो कुछ तुम्हें मिलना है तुम्हारे अपने विश्वास, और कर्म का फल मिलना है। लाख रुपये की बात है। तुम दूसरों की सेवा करो तुम्हारी सेवा होगी। दुखियों की सहायता करो तुम्हारी सहायता होती रहेगी यह संसार का नियम है। बाकी रह गया इस संसार से पार जाना जिन्हों पुत्रों, लड़कियों, स्त्रियों के साथ प्यार स्नेह है उनको चाहे मालिक भी साथ

ले जाये तो भी वे पार नहीं जा सकते। क्योंकि बाहर लगाव है। आवागवन तो उसका छूटेगा जैसे मैंने एक दिन पहले सूली का पता दिया था दूसरों का नहीं छूट सकता। वे तो फिर भी कहीं न कहीं जावेगें। यह भेद है।

सब को राधास्वामी

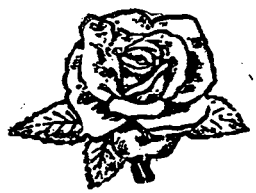

जीवन यात्रा

लेखक :—सेठ दुर्गादास साहिब चण्डीगढ़ ।

राधास्वामी । इन्सान को अपना जीवन किस ढंग से गुज़ारना चाहिये यह एक बड़ा भारी प्रश्न है, महत्वपूर्ण स्मस्था है । हर एक इन्सान यह चाहता है कि उसकी जीवन यात्रा सुख शान्ति से व्यतीत हो । वह कौन सा उपाय है कि जिससे यह सम्भव हो । सकता है । प्रात: उठे, काम पर गये, खाया पिया, रात को सो गये, यह चक्कर चलता रहता है । कोई समय आ जाता है इन्सान इस रोज़ २ के चक्कर से उदासीन हो जाता है । कई घर बार छोड़ कर बनबासी हो जाते हैं और कई उदासीनता में ही दिन काट जाते हैं । जीवन का कुछ भी आनन्द नहीं रहता । बहुत थोड़े इन्सान वैराग्य को प्राप्त करते हैं ।

क्या किया हम आय कर, क्या करेंगे जाय ।
इत के भये न उत के, चाले मूल गंवाय ।

आज कल हर एक प्राणी संसार के कामों में व्यस्त नज़र आ रहा हैं। हर एक जल्दी में है। जीवन की गति तेज़ हो रही है। ठहरने का समय नहीं। इस हालत में इन्सान हैरान व परेशान है, सन्तोष नहीं, अशान्ति ही अशान्ति है। इन्सान क्या करे और क्या न करे बात समझ से बाहर है। कोई मार्ग दर्शक नहीं। ईश्वर पर विश्वास नहीं। आइये इस समस्या पर विचार करें।

जीवन में काम चाहिए। काम में लीन रहें। काम में लगे रहने से शरीर को खुराक मिलती रहेगी, शारीरिक उदासीनता निकट नहीं आयेगी। किसी ने कहा है।

बेकार, कुछ किया कर, कपड़े उधेड़ सिया कर।

जब तक जीना तब तक सीना। लेकिन काम में लगे रहने के साथ २ मानसिक तृप्ति भी जरूरी है। यदि मस्तिष्क में कोई न कोई धुन रहेगी तो मन मग्न रहेगा। इस मन को उसकी खूराक दो। मन चंचल है। मन विचार चाहता है। विचार में आनन्द है। मन की खराक आनन्द है। आनन्द भी कई प्रकार का है। एक आनन्द स्त्री प्रेम में है यह काम

अंग का प्रेम है। दूसरा आनन्द छोटे बच्चों से प्रेम करने से मिलता है इस को मोह का प्रेम कहते हैं। तीसरा प्रेम गुरु से है यह अत्मिक प्रेम है। आत्मा की खुराक है।

अगर स्त्री आचारहीन हो जाये तो प्रेम को धक्का लगेगा प्रेम खतम हो जायेगा, अगर बच्चा आज्ञाकारी न रहे, तो मोह को धक्का लगेगा, अगर गुरु आदर्श से गिर जाये तो आत्मा निराश हो। जायेगी। आनन्द ऐसा होना चाहिए जो स्वत: हो। शारीरिक आनन्द के लिये स्त्री का सहारा ढूंडा, मानसिक आनन्द के लिये बच्चे का सहारा लिया, आत्मिक आनन्द के लिये गुरु का सहारा लिया। बाहिर या अन्तरी सहारे के बिना आनन्द लेना असम्भव है। जो आनन्द किसी के सहारे के बिना लिया जावे, उस को स्वत: आनन्द कहते हैं। आनन्द तो जीव के अन्तर है जब चाहे। आनन्द ले लिया, इस आनन्द के लिये अभ्यास की ज़रूरत है। भेद पाने की ज़रूरत है। हकीकत को जानने की ज़रूरत है। स्वत: आनन्द में ज़िन्दगी का सफर खुशी से कट

जाता है। कोई न कोई धुन चाहिये, धन की धुन बहुत अच्छी है इस धुन में शरीर और मन की समता रहती है धन की खिच बहुत मज़बूत है, इस का त्याग बड़ा कठिन है परन्तु धन सफर का रास्ता साफ और आसान कर देता है और सफर शानदार हो जाता है, मगर कमाई नेक हो, बिना किसी को धोखा दिये, बिन किसी के हक्क पर छापा मारे और नेक कामों में लगाई जावे :--

खाय पिलाय और लुटाए कर करले अपना काम।
चलती विरयां ऐ नरा तेरे संग न चले छदाम।

कबीर साहिब तो नेक कमाई को ईश्वर की भक्ति के बराबर कहते हैं।

कहे कबीरा बात दो, लखन हार लख ले।
के साहिब की बंदगी, के भूके कुछ दे।

धन से स्वर्ग मिलता है। साहिब के दर्शन होते हैं और शान्ति मिलती है। इस संसार में जो महा-पुरुष पधारे वह उपदेश कर गये कि किस तरह से ज़िन्दगी का सफर काटा जाये। वह फरमाते हैं कि ऐ इन्सान! तू अपनी ज़िन्दगी के कुछ नियम बना,

इन पर दृढ़ हो कर चल, तेरी निजात इसी में है। तेरी ज़िन्दगी बदल जावेगी। शानदार बन जायेगी और ज़िन्दगी गुज़ारने का आप को आनन्द मिलेगा और ज़िन्दगी का सफर खुशी खुशी कट जावेगा। वो नियम क्या हैं सुनिये, लिख कर अपने कमरा में लटका लीजिये, ताकि इन की हमेशा याद रहे।

१. शादी शुदा या कंवारा—शारीरक और मानसिक ब्रह्मचर्य आवश्यक है अपनी स्त्री की मरज़ी पर रहना सीखो।

२. अपनी ज़रूरतों को दायरे के अन्तर रखो और काम करते जाओ।

३. निन्दा और चुग़ली का त्याग—गुण ग्राही दृष्टि हो, शहद की मक्खी बन जाओ।

४. आहार व वस्त्र सादा रहे।

५. नींद और आहार में संयम् हो।

६. बड़ों का मान, दूसरों का मान, हर व्यक्ति के लिये प्रेम सुहानुभूति हो।

७. अपने आप को धोखा कभी मत देना. अपने स्वाथ के लिये किसी को धोखा मत दो, अगर

आप रूहानियत के हकदार बनना चाहते हैं, आसमानी सैर करना चाहते हैं, और शान्ति के इच्छुक हैं तो निम्नलिखित नियम् बना लें, सफलता आप के पांव चूमेगी।

८. अपनी नेक कमाई का कुछ भाग दान में हर रोज़ और हर महीने ज़रूर दिया जाये। दान देने का एक निराला तरीका यह है कि आप अपना नया कोट सिलाने लगे आप ने 40/- रुपया गज़ का कपड़ा पंसद किया, फैसला कर लो कि 30/- रुपया गज़ का कपड़ा खरीदूंगा और जो रकम बचेंगी, दान कर दूंगा।

९. खूब मेहनत करो कि फुरसत तक न मिले खूब धन इक्कठा करो पर इमान्दारी से।

१०. मन एकान्त प्रिय बना लो, दिन में एक बार एकान्त सेवन ज़रूर हो।

११. मित्र और शत्रु को एक समान जानो।

१२. अपनो बासनाओं को अनुकूल बना लो। अच्छे बुरे काम वश मैं हों।

१३. दूसरों के काम मैं दखल मत दो, हर समय यह

शब्द ज़बान पर रहें "तुझे क्या"।

१४. आसक्ति में अनासक्ति पैदा करने की कोशिश करो जैसे अपने बच्चे से प्यार करते हो खूब प्यार किया करो, परन्तु प्यार को फर्ज़ समझ कर किया करो क्योंकि लड़का आप का है आप का फर्ज़ है इस से प्यार करना पर प्यार में फंसो मत।

१५. अपने मन को सदा सम अवस्था में रखने की आदत डालो।

१६. ग़म, फिकर और खुशी न होने का नाम ही योग है।

१७. हर जगह अनेक में एक का दृश्य नज़र आये।

१८. यदि ईश्वर विश्वासी हो तो बहुत अच्छा, फिर ऐसा समझो. जो कुछ मेरे साथ हो रहा है, हुआ और होगा, मेरे लिये अच्छा होगा। ऐसा विश्वास कर लो, ऐसा ही सिद्ध होगा।

१९. यदि आप को आवागवन से बचने की इच्छा है तो अपने कर्म के फल की इच्छा कभी न रखो।

२०. केवल एक की पूजा करो, प्रेम से, भक्ति से। भक्ति से श्रद्धा और श्रद्धा से विश्वास पैदा होता है। विश्वास जीवन है।

कबीर वा दिन याद कर, पग ऊपर तल सीस।
मृत्यु लोक में आयकर, भूल गया जगदीश।

यह संसार मुसाफिर खाना है

लेखिक :—सेठ दुर्गादास साहिब चण्डीगढ़

1. एक साधु सफर में था। थका हुआ था। सामने एक खूबसूरत आलीशान बाग़ और इसमें महल दिखाई दिया। मकान में अराम के लिए घुस गया। सामने देखा एक बहुत सुन्दर पलंग देखा। इस पर लेटते ही गहरी नींद आ गई। यह इस देश के महाराजा का महल था महाराज का इस कमरे में अराम के लिए प्रवेश हुआ। क्या देखता है कि एक अजनवी साधु इसके बिस्तरे पर मज़े से सो रहा है। उसे जगाया और पूछा। आप यहां कैसे आ गये। यह तो आपका मकान नहीं है। साधु ने पूछा कि क्या यह आपका मकान है ? महाराज ने उत्तर दिया। हां ! यह मेरा मकान है। साधू ने पूछा, आपसे पहले इस मकान में कौन रहता था ? महाराज ने कहा 'मेरा बाप' और इससे पहले ? उसने जवाव दिया, 'मेरा बाबा' साधु ने

कहा फिर आपका मकान कैसे हुआ। आपके बाद आपका लड़का यहां रहेगा। यह तो सराय है। मुसाफिर खाना है। मुसाफिर खाना समझ कर आराम के लिए यहां आ गया। आप भी तो यहां आराम ही करते है।

2. इस संसार के सफर में अच्छे अच्छे दृश्य, रंग बेरंगे ख़शबुदार फूल, बाग बगीचे, आबशारें, बड़ी बड़ी नहरें और नदियां मज़ेदार खाने और कई प्रकार के फल, आलीशान महल, बेटे बेटी का प्यार स्त्री प्रेम धन का लोभ हज़ारों प्रकार की दिल को लुभाने वाली चीज़े मिलेंगी। कहीं इन्हें देखकर सफर में रुक न जाना, फंस न जाना। इनमें फंसकर अपने सफर को न भूल जाना। कबीर साहिब फरमाते हैं। ये सब ठग हैं, जो मुसाफिर की पूंजी छीन लेते हैं। अगर आप इनसे बच गये तो सफर ठीक कट जायेगा वरना सफर में ही रह जाओगे। आपकी पूंजी क्या है। कबीर साहिब फरमाते हैं। 'आपकी सुरत आपकी पूंजी है'। कहीं अपनी सुरत को इन चीज़ों में न फंसा देना अगर जीवन के सफर में आपकी सुरत इन चीज़ों में फंस गई फिर सफर काटना कठिन है।

ऐ मुसफिर ! होशियार हो जाओ। इस संसार को एक मुसाफिरखाना समझ ले।

3. इस संसार के सरायेखाना में बड़े २ और शक्तिशाली राज्य समाप्त हो गये। शाही खानदान इस संसार से मिट गये। आलीशान महलों का नामोनिशां न रहा। बच्चे लावारस पाये जाते हैं। बड़े २ योधा कहां हैं। जहां लक्ष्मीं का वास था अब वहां चिराग तक नहीं है। कल जहां समुन्दर था आज पहाड़ है। जहां आवादी थी आज घना जंगल है। कल जहां शहर आबाद था आज खण्डरात हैं। कल जहां दरिया था आज रेगेस्तान है। जहां लहराते बाग थे वहां उजाड़ है। कल जहां रौनक थी आज कबरस्तान है। आप क्या कहोगे बुद्धि दंग है। पुराने मुसाफिर चले गये नये मुसाफिर आ गये। कोई 10 साल बाद, कोई बीस पच्चीस साल बाद, और कोई पच्चास साल बाद और कोई सौ साल बाद जा रहा है। यह दृश्य आपको आंखों के सामने हैं। लेकिन आपको स्वयं अपनी आंख पर विश्वास नहीं है। इसका क्या इलाज ? ये सब मुसाफिरखाना के असर हैं। इसलिए आपको मानना पड़ेगा कि यह संसार

मुसाफिरखाना है। इस संसार को मुसाफिरखाना जानो। इसमें हर एक की भलाई है।

4. इन्सान ग़लती से अपनी संतान को अपना समझता है यह उसका भ्रम है कि इसकी संतान और इसमें कोई अन्तर नहीं है। ऐसा भ्रम होना ही चाहिए। क्योंकि संतान असल नसल और शकल से आई है और हमज़ात है। अपने खून से इसने स्वयं पैदा की है। इसलिए इसको तसल्ली रहती है कि इसकी सम्पत्ति, धन, मकान और ज़मीन की वारस इसकी संतान होगी। लेकिन इन्सान यह भूल गया कि भाई का भाई के साथ झगड़ा है। एक दूसरे के जीवन के घातक सिद्ध होते हैं। पति पत्नि की नहीं बनती। बाप बेटे को उत्तर दे देता है। घर से निकाल देता है फाररवती दे देता है कि लड़का इसकी सम्पति का वारस न होगा आदि आदि। बेटा बाप को कतल करने तक को तैयार हो जाता है। मौत तो इन सबको सदा के लिए जुदा कर देती है। लेकिन फिर भी इन्सान को ज्ञान नहीं होता कि यह संसार एक मुसाफिरखाना है और संसार के सब सम्बन्ध कल्पित हैं।

5· एक नगर में एक सज्जन रहते थे। हर एक की सहायता करते, नेक और शुभ काम करते, परोपकार करते, दानी थे। इनकी शहर में चर्चा थी। एक आत्माराम इनके पास आया और कहने लगा कि आप बड़े प्रतिष्ठित व' प्रसिद्ध महापुरुष हैं। बड़े नेक अच्छे काम करते हैं और आप बड़े दानी हैं इसका कारण पूछने आया हूं। आप ऐसा कैसे करते हैं। उसने उत्तर दिया कि मुझे अपने घर का ध्यान रहता है और अपनी मौत को सदा याद रखता हूं और मैं समझता हूं कि यह संसार एक मुसाफिर खाना है। आत्मा राम वापिस चला गया लेकिन इसकी बात समझ में न आई।

कुछ दिये हुये आत्मा राम बीमार हो गया। दानी पुरुष इसका पता लेने गया। वहां डाक्टर साहिब रोगी की देखभाल करने के बाद बोले कि आपका रोग बढ़ गया है कुछ समझ नहीं आ रही। बीमारी लाइलाज है। मेरा विचार है कि आप दो चार दिन जीवित रह सकोगे। आपकी मौत यकीनी है।

फिर क्या था. आत्मा राम को होश आई। दुकान बन्द, कारोकार ठप, सबसे बातचीत बन्द। जो रुपया था सब गरीबों और ब्रह्मणों में बाटना शुरू कर दिया। एक दिन दानी पुरुष उसका पता लेने आया। पूछने लगा कि यह क्या हो रहा है आत्माराम ने उत्तर दिया मौत सामने खड़ी दिखाई दे रही है, संसार मुसाफिर खाना है। उस समय आत्माराम को दानी महापुरुष की बात समझ में आई। जो इस संसार को मुसाफिरखाना समझ लेते हैं वही ऐसा काम कर सकते हैं।

मैं पहली बड़ी लड़ाई 1914-18 में भरती होकर इराक चला गा। वहां से 1935 में वापिस आया। यद्यपि मैं वहाँ 17 साल रहा लेकिन कभी मेरे दिल में यह विचार नहीं आया कि यह देश मेरा है। मेरा ध्यान सदा अपनी जन्म भूमि, अपने गांव और अपने देश की ओर रहता था। इसी प्रकार जो इस संसार को अपना देश नहीं समझते हैं और इनका ध्यान अपने निज धाम की ओर लगा रहता है। उनके लिए यह संसार एक मुसाफिरखाना है।

7. लड़के की मौत पर बाप का सम्बन्ध इससे सदा के लिए टूट जाता है अगर बाप स्वयं स्वर्गवास हो जाये तो भी सम्बन्ध टूट गया। नाता अटूट न रहा, केवल कल्पित था। यह सम्बन्ध लेन देन के क्रम में था। जीवन के सफर में सम्बन्ध हो गया यह ऋण बन्धु संसार है। सफर में मुलाकात हो गई। सफर के खातमा के साथ सम्बन्ध भी समाप्त हो गया। तो क्या यह संसार मुसाफिरखाना न हुआ ?

8. जो मुसाफिर सफर में बोझा कम रखते हैं वे सुखी रहते हैं आराम से सफर करते हैं। इसलिए इस जीवन के सफर में बोझा कम कर लो। अपनी आवश्यकताओं को जितना कम कर सकते हो कम करते जाओ। देखो कितना मज़ा मिलेगा, हलके रहोगे, बेचिन्त रहोगे। सामान की चिन्ता न सतायेगी महर्षि शिवव्रतलाल जी अपने साथ एक धोती, एक कुर्ता, एक कलम और कुछ कागज़ रखा करते थे। उससे अधिक सामान मैंने इनके पास कभी नहीं देखा था।

9. जीवन का सफर तो काटना ही पड़ेगा। फिर क्यों हंसी खुशी से सफर न काटो। इश्वर ने जीवन

दिया है जीवन का मज़ा लो। जीवन का आनन्द यही है कि स्वयं प्रसन्न रहो और दूसरों को खुश रखो। यह खुशी उन्हें प्राप्त होती है जो नेक काम करते हैं, दूसरों से भलाई करते हैं और किसी का दिल नहीं दुखाते, मीठी ज़बान होती है। कंवल के फूल की तरह पानी में (संसार में) तैरते रहते हैं। संसार में डूबो मत। सफर को मुसीबत मत समझो। रास्ता सीधा और साफ है। चलने में कष्ट न होगा। सफर असानी से कट जायेगा।

10. अगर आसानी और आराम से सफर करना चाहते हो तो सफर में साथी होना चाहिए। अगर यह ज्ञान हो चुका है कि यह संसार एक मुसाफिर खाना है और आप सफर में हैं तो सत्गुरु को साथी बना लो, दूसरे नाम को साथी बना लो, तीसरे सत्संग को साथी बना लो अध्यात्मिकता के विचार से सफर बहुत अच्छा रहेगा और अन्तिम अवस्था को प्राप्त कर लोगे किसी प्रकार की चिन्ता न होगी।

अगर संसारी हो तो पुत्र, पुत्री या स्त्री को सफर का साथी बना लेना चाहिए। इसके बिना

जीवन नहीं कटेगा जीवन का सफर कठिन रहेगा। लेकिन शर्त यह है कि पूरा ध्यान रहे कि अपना ज्ञान उनपर ठोंसना आरम्भ न कर दो कि संसार एक स्वप्न है। इस संसार के सब सम्बन्ध झूठे हैं। कौन किसी का पुत्र कौन किसी की स्त्री आदि आदि वरना जीवन की कठिनायां बढ़ जायेंगी।

11. मुसाफिर को आराम सफर के खातमा पर मिला करता है। सफर में थकावट है, भूख और प्यास सतायेगी। हर प्रकार का कष्ट है लेकिन सफर के बाद शान्ति है। न ही सफर की फिर इच्छा रहती है क्योंकि सफर का अनुभव हो चुका है इसको मुक्ति कहते हैं।

कबीरा वा दिन याद कर, पग उपर तल सीस।
मृत्यु लोक में आई के, भूल गया जगदीश।
पांच पहर धन्दे गया, तीन पहर रहा सोय।
एक पहर हरी न भजा, मुक्ति कहां से हाये।

———

हम जाने थे खायेंगे, बहुत ज़मीन बहुमाल।
ज्यों का त्यों रह गया, पकड़ ले गया काल।

———

पानी केरा बुलबुला, इस मानुष की जात।
देखत ही छुप जायेगा, ज्यों तारा परभात।

जनम मरन दुख याद कर, कूड़े काम नवार।
जिन जिन पंथों चालना, सोई पंथ संवार।

सेठ दुर्गा दास साहिब क्या थे ?

प्रकाशक मानव मन्दिर

कई भाई यह चाहते हैं कि सेठ दुर्गादास जी के जीवन चरित्र के बारे कुछ मानव मन्दिर में लिखा जाये। सम्पादक 'मनुष्य बनो' ने भी लिखा। पहला प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जीवन है क्या, बाहर के तत्वों के मेल से एक केन्द्र बन जाता है, इसमें चेतनता का भी अंश है। जब तक केन्द्र का अस्तित्व है बाह्य प्रभावों से प्रभावित हो कर अनेक प्रकार की चेष्टायें उभरती रहती हैं, खेल करती रहती हैं। यही इन्सान का चरित्र बन जाता है।

इसी बात को सेठ सहिब ने अपने लेखों "जीवन यात्रा और यह संसार मुसाफिर खाना है" में लिखी है।

साधारण जीवन तो सब का एक जैसा है, जन्म लेना, जन्म स्थान, पढ़ना लिखना, उदर पूर्ति के साधन,

सन्तान उत्पन्न करना, बचपन यौवन उधेड़पन और बुढ़ापे की अवस्थाओं से गुजरना और अन्त में मर जाना, यह तो सब जीवन धारियों का एक जैसा है। यदि इस प्रकार उनका जीवन चरित्र लिखा जाये तो जितना जी चाहे लिखा जा सकता है लेकिन सेठ दुर्गादास साहिब के जीवन चरित्र में एक विशेषता पाई जाती है वह यह कि उन्होंने अपने जीवन का बहुत सा भाग हजूर परम दयाल जी महाराज की संगत में व्यतीत किया और जिस मिश्न को लेकर हजूर इस संसार में अवतरित हुए उस मिश्न को पूरा करने के लिये उनके जीवन तत्व काम आये। यही उन के जीवन की विशेषता है।

बाकी रह गया उनका जीवन किस प्रकृति का बना था और किस प्रकार की चेष्टायें उनके अन्तर उठती थी यह हर एक महापुरुष की बाणियों, लेखों विचारों और उदगारों से पता लग सकता है। सेठ साहिब के लेख आप काफी समय से मानव मन्दिर में पढ़ते आ रहे हैं, इस अंक में उनके अन्तिम लेख दरज हैं।

उन्होंने निम्नलिखित पांच किताबें लिखीं।

1. गृहस्थी गुरु भाग पहला उर्दू भाषा में
2. गृहस्थी गुरु भाग दूसरा ,,
3. दयाल फकीर की जीवनी हिन्दी भाषा में
4. Beyond the Soul अंग्रेजी भाषा में
5. इन्सान हो तो इन्सान बनो उर्दू भाषा में

एक और किताब भी वह लिख रहे थे मगर छपी नहीं।

इन किताबों में से कुछ विचार इस अंक में दिये जाते हैं।

गृहस्थि गुरु पहला भाग

सेठ दुर्गादास साहिब ने हजूर परम दयाल जी महाराज से सन् 1957 इसवी में पत्र व्यवहार किया जो कि निम्नलिखित है।

दिनांक 14-8-57

प्यारी दुगियां (सेठ दुर्गादास जी) राधास्वामी।

आज आपका विचार आया। क्यों आया? संस्कार या मौज। क्या पता हमारा और आप का संस्कार पिछले जन्मों से मिला हुआ है। मैं कह नहीं

सकता। दाता दयाल मुझसे फरमाया करते थे। "मैं पिछले जन्म में गौत्मबुद्ध था और तुम भिक्षु थे।"

तुम्हारी मेरी पहली मुलाकात 1918 में वसरा में हुई थी कुछ दोस्त वहां और भी थे। दिल में उस मालिक, परमतत्व, सर्वाधार के मिलने का खबत था, जज्बा था, कुरेद थी। उस समय आप लोग मुझ से पूछा करते थे। मास्टर जो ! हमें भी कुछ बताओ। मैं उत्तर दिया करता था कि मैं कुछ नहीं जानता। हां ! अगर जीवन में कुछ मिल गया तो बता जाऊंगा। प्यारे ! मेरे जीवन के अनुभव ने, दिल की कुरेद ने, तलाश के परिणाम ने जो कुछ बताया उसको विना लगाव लपेट, साफ और खुले शब्दों में सच्चाई से प्रकट कर चला हूं।

आप पिछले चार साल से बीस रुपये मासिक भेजकर मेरी आर्थिक सहायता कर रहे हैं। मेरे भाई राये साहिब सुरेन्द्र नाथ ने भाई के प्रेम के नाते मेरे शारीरिक लड़के शाह पदम जंग की पढ़ाई में सहायता की है। उसका करज़ा तो उतर रहा है,

उत्तर जायेगा। हां! तुम्हारा करज़ा मेरे सिर पर बाकी है। सम्भव है, जीवन में न उतार सकूं। इसके लिए शाह पदम जंग को कह जाऊंगा कि वह किसी और गरीब की सहायता अपने जीवन में कर दे।

पारमार्थिक रिश्ता से मैं आपको विवश नहीं कर सकता हां! अगर समय मिले और हालात आज्ञा दें तो दिल्ली में दाता दयाल का Statue जो मेरे मकान पर मौजूद है नसब कर देना और उसपर नीचे लिखी इबारत लिखवा देना।

1. Be 'man' 'Entire' whole and in everything
2. Here is a statue of perfect man Dayal Maharishi Shiv Brat Lal verman M.A. who was liberator of self from the effects of body mind & soul.

यह विचार केवल श्रद्धा और विश्वास के अधीन नहीं हैं वल्कि हकीकत और सच्चाई के विचार से हैं क्योंकि उनकी शिक्षा ने जिनको मैं प्रारम्भिक जीवन में प्रयाप्त समय तक समझने में असमर्थ रहा, यह विश्वास दिला दिया है कि शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बोधभान का साक्षी एक अलग तत्व है और

वह इस त्रिगुणात्मक जगत में फंसकर दुख सुख शादी ग़मी, अकल बेअकली और आनन्द बेआनन्दी आदि के बोधभान के अधीन आता हुआ दुख सुख का भागी बनता रहता है। पूर्ण पुरुष के सत्संग और सुरत शब्द योग के अभ्यास की बदौलत वह इस चक्कर से निकल कर आजाद हो जाता है। यह मेरे जीवन का अनुभव है। इसके अतिरिक्त अगर पूर्ण पुरुष की आज्ञा अधीन प्रकृति के नियम को समझकर जीवन व्यतीत किया जाये तो मानव जीवन उत्तम और आनन्दमय हो सकता है।

इसलिए ये दोनों बोरड वहां नसब करा देना। मेरा यह नाशवान शरीर कब तक है, मौज जाने। इस समय मस्ती की हालत तारी रहती है। क्या पता यह दशा रूहानियत है या दमाग़ की खराबी।

जहां तक तुम्हारी प्रकृति का प्रश्न है। दाता दयाल का शब्द पढ़ो। पूरा याद नहीं मगर पहली कड़ी यह है।

दिल लगाना था कि दिल लगी जाती रही।

दिल का लगाना ही नाम का जाप है, अन्दर भी और बाहर भी। जब तक जीवन है काम करो,

काम करो, काम करो। योग भक्ति, जाप और कर्म क्या हैं ? नाम का जाप ही तो है। अधिक क्या लिखूं खुश रहो।

दुआ है दिल से तू खुशहाल और खुश दिल रहे।
जिन्दगी सुख से गुज़रे और तू साहिब दिल रहे।
वह ज़ात मालिक ज़ात तेरी ग़ैर तुमसे है नहीं।
इस बात का ध्यान तुमको, हर दिन और हर वक्त रहे।
राधास्वामी नाम तेरा अपना ही नाम है अज़ीज़।
इसको न भूलना यह बात सदा तेरे चित रहे।

मेरे जिम्मे दाता ने यह कर्तव्य लगाया था कि फकीर ! ज़माना के अनुसार शिक्षा को बदल जाना। अपनी नीयत से जो समझा सच्चाई से प्रकट कर दिया। आगे मौज।

मेरा विचार है कि आने वाले युग में मेरे विचारों की लोग कदर करेंगे क्योंकि इनमें सच्चाई है, रोचकता और भयानकता नहीं है। ये विचार समझदार वर्ग के लिए बहुत लाभदायक होंगे।

दिनांक 13-1-58

राधास्वामी।

चला चल जग में मत घबराये।

कर्म भोग पिछले हैं जो, भुगते बिन नहीं गुज़ारा।
परमदयाल को दया रहेगी, नहीं कोई काम दुशवारा।
वह हैं तेरे सहाये,
सिर पर हाथ गुरु ने रखा, वह रक्षा करेंगे आप।
तुमको चिन्ता किस बात की, मेट दे तेरे ताप।
वह हैं तेरे सहाये
काम है लेना, तू ने देना, करज़ा सिर पर भार।
खुशी से दे उतार दुर्गियां, खुशी से बेड़ा पार।
वह हैं तेरे सहाये
मौज अधीन रह करो कामा. कर्म हो सदा निष्कामा।
मन में रहे सदा हुल्लास, और सदा रहे हरखाना।
यही है असली डपाय
तू है असली परम तत्व का रूपा, कलयुग का तू है भूपा।
भरम वश पड़ा अज्ञान के कूपा, एक दिन यह समझ तुम्हे आये।

नोट नं 1, जब मैं बसरा पहुंचा, महाराज जी Telegraph Instructor का काम कर रहे थे। इसलिए मैं वहां आपकों मास्टर जी कहकर याद किया करता था।

2. कर्ज़ा चुकाने का असूल यही है। किसी ने बुरा भला कहा, सहन किया। किसी ने मेरी सहायता की, हो सके तो समय पर उसकी, वरना किसी दूसरे की सहायता करदूं। सहायता न देना और न लेना मानवता नहीं है। सहायता लेना और देना, खाना और खिलाना, काम आना और काम लेना मानवता के विशेष गुण हैं। जो इनसे काम नहीं लेता, अधूरा रहता है। जब तक जीवन है सहायता करो और कराओ, सहानुभूति दो और लो, काम लो और काम आओ, नीच स्वार्थपने से बचकर रहो फिर देखो जीवन किस शान से व्यतीत होता है। अगर किसी के काम आते हो तो उपकार मत जताओ। अगर कोई बदला न दे सके तो बुरा भला मत कहो निष्काम भाव रखो।

गृहस्थी गुरु भाग २

उप्रोक्त पुस्तक के पृष्ट 139 पर उनका यह लेख दरज है :—

भरोसा तेरा है, तेरी आस मन में।
लगा रहता हूं, तेरे सुमिरन भजन में।

महाराज शिवब्रतलाल जी वर्मन एम. ए का यह सूत्र है। मैं देखता हूं। इनका हर कलाम सूत्र है। समुन्द्र को कूजा में बन्द कर दिया है। तुम जिस कदर डुबकी लगाओगे तुमको हकीकत के रूहानियत और असलियत के अन्मोल मोती मिलते रहेंगे।

जीव आसरा चाहता है। सहारा चाहता है क्योंकि वह कमज़ोर है। इसका जीवन इसके लिये भार दिखाई देता है वह अपनी कमज़ोरी को स्वयं महसूस करता है क्योंकि इसने कोई बुरा काम किया है, कोई पाप किया है, किसी को नुकसान किया है, किसी का दिल दुखाया है यद्यपि वह अपनी ज़बान से कुछ न कहे लेकिन वह अपने मन को खामोश नहीं कर सकता। इसका मन इसको फटकारता रहता है और दुखी करता रहता है।

यद्यपि जीव इस कोशिश में रहता है कि वह अपने मन को खामोश करदे। लेकिन यह चुप कैसे हो। इसके मस्तिष्क पर फिलमी निशान पड़ चुका हैं। यद्यपि वह निशान अच्छा हो या बुरा, जब इसका मन बेकार होता है तो वह फिल्म चला करती है और मन ऐसे जीव को परेशान कर देता है जिसके

बोधभान विल्कुल नहीं मरे हैं वल्कि वे दबे हुए पड़े हैं। वह जीव भय खाता है, परेशान होता है, डरता रहता है क्योंकि इससे कोई बुरा काम हो गया है जिसका परिणाम कमज़ोरी पैदा करता है।

ऐसे कमज़ोर व्यक्ति का इलाज आसरा लेना है। सबसे बड़ा आसरा परमात्मा का होता है। तुम इसकी शरण में चले जाओ। उसके चरण पकड़लो। तुमको उत्साह मिलेगा और तसल्ली मिलेगी वह सबके दोष क्षमा कर देता है। तुम्हारे पाप भी वह क्षमा कर देगा। तुम इस एक विचार को पक्का करते चलो तुम उस सर्वाधार के या प्रभु के समीप होते जाओगे। तुम अपनी कमज़ोरियों को दूर होते हुये महसूस करोगे। ईश्वर भक्ति आसरा देती है ईश्वर भक्ति की ओर बढ़ते हैं वह लोग जिनमें कमज़ोरियां आ चुकी हैं, गिरावट आ चुकी है, वह पाप कर चुके हैं। किसी बच्चे को मन्दिर जाने, पूजा करने और भक्ति करने की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि उसका मन शुद्ध होता है। धोबी के घाट पर केवल मैले कपड़े ही जाते हैं। बीमार ही डाक्टरों के पास भटकता फिरता है। गन्दी या मैली जगह की ही

सफाई होती है। गन्दे दिल ही स्वच्छ किये जाते है।

मैं तुम्हे एक सच्ची घटना सुनाता हू "परम दयाल जी के पास एक आदमी आया, बातों बातों में उसने बताया कि उसका लड़का जो कालज में पड़ता है, बड़ी भक्ति करता है। वह हर रोज प्रात: सायं मन्दिर को जाता है। बहुत समय तक वहां शब्द गाता है, प्रार्थना करता है। मां बाप ने अपने लड़के की बड़ी प्रशंसा की।

परम दयाल जी ने फरमाया। तुम्हारा लड़का पदमाश हो गया है। क्योंकि महाराज का अपना अनुभव है, इस अनुभव के आधार पर वह शीघ्र परिणाम निकाल लेते हैं। उन्होंने सोचा लड़का कालज में पढ़ता है, उसका स्वास्थ्य बड़ा अच्छा है। बाप धनी आदमी है, रुपये पैसे की तंगी उसको नहीं है, प्रकट रूप में लड़के को कोई कष्ट नहीं है। फिर इसकी भक्ति क्या अर्थ रखती है। इसलिए उन्होंने कह दिया कि तेरे लड़के का चाल चलन ठीक नहीं है।

यह बात सुन कर बाप को क्रोध आ गया। वह महाराज जी से कहने लगा, यह आप किस तरह फरमाते हैं। आपके पास क्या प्रमाण है ? तब महाराज जी ने कहा। तुम घर जा कर यह कह दो और प्रसिद्ध कर दो कि परम दयाल जी बड़े योगी पुरुष हैं। वह दिल की मुराद पुरी कर देते हैं। तब मैं आपकी तसल्ली कर दूंगा।

बाप ने घर जाकर ऐसा ही किया। लड़के ने भी इसको सुना। वह सोचने लगा मैं भी परम दयाल जी के पास जाऊंगा। ऐसा सोचते सोचते एक दिन परम दयाल जी के मकान पर चला गया, और इनसे एकान्त में मिला। महाराज जी बड़े प्रेम से मिले, उसको बैठाया और पूछा बेटा ! क्या बात है। सहानुभूती से बात चीत करने लगे। उसने कहा महाराज ! मंदिर के सामने एक लड़की रहती है। मेरा उसके साथ प्रेम हो गया है। वह लड़की भी मुझ से प्रेम करती है। हम दोनों ने निर्णय कर लिया है कि हम आपिस में विवाह कर लेंगे। लेकिन मैं ब्रह्मण हूं। वह ब्रह्मण जाति की नहिं है। मेरे मां बाप कभी आज्ञा नहीं देंगे। इसलिए मैं परेशान हूं

और बेबस हूं। क्या करूं और क्या न करूं। इसी सोच फिकर में रहता हूं।

महाराज जी ने उत्तर दिया। अच्छा तुम चिन्ता न करो। मैं हर बात का प्रवन्ध करूंगा। तेरा विवाह इस लड़की के साथ हो जायेगा मैं तुम्हारे बाप को राज़ी करलूंगा। मैं वायदा करता हूं तुम अपने उद्देश्य में सफल हो जाओगे लेकिन मेरे साथ तुम वायदा करो कि बी ऐ की परीक्षा देने के बाद विवाह करोगे। तब तक तुम लड़की के समीप नहीं जाओगे। वह लड़का मान गया। इसके बाप को बताया गया कि तुम्हारा लड़का भक्ति नहीं करता है बल्कि इश्क कमाता है।

यह महाराज जी का अपना अनुभव है जो छोटी आयु में भक्ति करता है वह अपना वीर्य नष्ट करता है और कमज़ोर हो जाता है। ऐसे जीव ही अशान्ति के शिकार होते हैं। ऐसे जीवों को या तो डाक्टर लोग लूटेंगे या साधु लोग लूटेंगे। महर्षि जी महाराज ऐसे लोगों को तसल्ली देते हैं और फरमाते हैं।

भरोसा तेरा है, तेरी आस मन में
लगा रहता हूं तेरे सुमिरन भजन में

दाता सबका कल्यान करे और अपने चरणों में लगाये रखे।

हजूर के चरणों की धूल
दुर्गादास चण्डीगढ़

दयाल फकीर की जीवनी

इस पुस्तक की भूमिका मे वह लिखते हैं :—

मनुष्य दुनियां में आया। आंख खोली! दुनियां के कारोबार से सम्बन्ध पैदा किया। बचपन में स्वतंत्रता का आनन्द लिया। जवानी आई। गृहस्थ के व्यवहार से सम्बन्ध पैदा किया। शादी, ग़मी, चिन्ता अचिन्तपना, दुख सुख की द्वन्द अवस्थाओं से गुज़रा। जीवन के अनुभवों में विस्तार हुआ। अधेड़ बना। बुढ़ापा आया शारीरिक और मानसिक निर्बलता गले का हार हो गई। सांसारिक कारोबार से घबराने लगा उदासी आई। सोचने को विवश हुआ कि जीवन क्या है और उस का उद्देश्य क्या है ?

समय आने पर मनुष्य के लिये सांसारिक कारोबार, स्त्री, बच्चे धर्म और मान की इच्छा उसे खुशी नहीं दे सकती किन्तु जीवन भार सिद्ध होता है। वह ऐसी अवस्था चाहता है जिस में शान्ति हो, बेगमी, बेफिक्री हो। इससे सिद्ध होता है कि मानव जीवन का उद्देश्य प्राप्त करने में असमर्थ सिद्ध होता है। हां जिन की शारीरिक और मानसिक शक्ति बलवान है, यह खिलौने कुछ समय तक दिलचस्पी का कारण होते हैं और अनुभव बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

मनुष्य को पूर्ण शान्ति इस समझ से मिल सकती है कि मैं कौन हूं। जीवन और इसका उद्देश्य क्या है? यह समझ किसी पूर्ण पुरुष के सत्संग और बचन से आ सकती है, किन्तु संस्कार और अधिकार के अनुसार समय लगता है। पूर्ण पुरुष मनुष्य की प्रकृति को देखकर के उस को ऐसी हिदायत और काम देता है जिस से उसकी दबी हुई शक्ति उभर आती है।

वह साधन और अभ्यास की श्रेणियों से गुज़ारता हुआ बचन का सहारा दे दे कर एक ऐसी अवस्था में पहुंचा देता है जहां कुरेद समाप्त हो जाती है।

जीवन और उसके काम एक खेल दिखाई पड़ते हैं। वह सांसारिक कार्यों से सम्बन्ध रखता हुआ अडोल गति में रहता है। साधन और अभ्यास हर आदमी के लिये आवश्यक नहीं। मनुष्य को एक विशेष अवस्था में पहुंचाने के लिए इन चीज़ों की आवश्यकता होती है। जप तप, संध्या हवन, तीर्थ व्रत, पूजा पाठ, सुमिरन ध्यान और भजन ज्ञान आदि मगर यह सब साधन हैं जीवन का इष्ट पद नहीं।

मैं भी संसार में आया। बड़ा हुआ। बेयार बेमददगार, न कोई पथ प्रदर्शक न कोई सहारा। निर्धनता का मारा हुआ, जिस के पिता पर भारी ऋण था, किसी अन्तरीय शक्ति के अधीन बसरा पहुंचा। मेरा प्रालब्ध कर्म मुझे परम दयाल पं० फकीर चन्द जी महाराज पूर्ण पुरुष के चरणों में खेंच ले गया। उस समय मैं १८ वर्ष का था।

मेरे गुरु भी गृहस्थी हैं। जीवन के हर मरहले का उन्हें पूर्ण अनुभव है। वह जानते हैं गृहस्थी को सांसारिक कारोबार और घरेलू मामलों में किन २ कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है और उन पर

काबू पाने का ढंग क्या है। इसलिये जीवन के प्रत्येक मरहले में मुझे अपने हित और मत का सहारा देते हुए इस समय ऐसी दशा में ले आये कि अब मैं भली प्रकार समझ गया हूं कि मानव जीवन का इष्ट क्या है।

मैं समझता हूं कि मनुष्य को उस परम तत्व की मौज में रह कर अपने जीवन को खुशी, बेग़मी और आनन्द से बिताना चाहिये और पूर्ण पुरुष की हिदायत पर चल कर जीवन ध्येय को प्राप्त करना चाहिये।

मैं महाराज जी का सेवक नहीं हूं यद्यपि मैंने नाम महाराज जी से लिया। सेवक की तो पग पग पर परीक्षा होती रहती है। परीक्षा बड़ी कठिन है। कोई भी सेवक परीक्षा में पूरा उतरा होगा।

इसलिये मैं महाराज जी का पुत्र बनने की कोशिश में हूं। पुत्र के सब कसूर क्षमा हो जाते हैं। नालायक पुत्र भी पिता की सम्पति का उत्तराधिकारी बनता है। उत्तराधिकार में तो कुछ मुझे भी मिल जायेगा।

परम दयाल के चरणों की धूल—

दुर्गादास

Beyond The Soul

यह पत्र सेठ साहिब ने पं. जवाहर लाल नेहरू को अंग्रेज़ी भाषा में लिखा।

A LETTER TO PT. JWAHAR LAL NEHRU

Jai Hind.

I read in the 'Tribune' your interesting interview with Mr Adams on 6-1-1962 Your goodself disclosed in the course of conversation that you are irreligious.

No doubt, you are our supreme and most respected leader. we love you and adore you, but we cannot bear that you call your self irreligious when you are apparently religious in all sincerity. we do not wish as well that oponents should take advantage of your innocent utterances in the present election

May I dare say that the religion of the man is to be good and do good to others Nothing more or less than this.

There are three kinds of religions.

1. Religion of the body.
2. Religion of the mind.
3. Religion of the soul.

To be brief. The religion of the body is action. It acts while awake. When the body acts for the good of others, It is the religion of the body.

Sir, you work hard from morning till late hours of night. By dint of your work, you have completed big projects and have dotted all over india big mills, Factories, Dams, and have thus done Immense good to the whole of the country. Therefore you are bodily religious. We therefore call you 'Karam Yogi'

2. The body ceases to work when asleep. Similarly when one is absorbed mentally he becomes unconscious of his body. When in this state of mental .....built up, he thinks good of others, he is mentally religious.

Sir, you are thinking always good of us and have, by current of your high thoughts, have risen our status in the whole world. This is an achievement, which none could have made You always think and wish that all Indians should be well fed, well clothed, well housed and well educated and economically well placed. It is not only your wish but, Sir, you have given practical shape to it, to the religion

of the mind. Therefore you are mentally religious and those who are mentally religious are called 'Sadhus'

3. The religion of the soul is to go beyond the mental region, to the region of the soul, where from we emanate. Every one of us has a craving with in oneself to attain blissful peace. Those who practice it are called 'Saints'

we wish you call yourself religious, you are religious when you believe in the existence of all powerful Element.

Those who remain optimistic and always hopefinl are believers of God even if he is atheist. Desire means faith to achieve the desired object. Faith is a must when there is a desire and that faith means unseen God. Sir, Faith is God and God is Faith.

सबको राधास्वामी

परम दयाल फकीर प्रवचन मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

तिथि २७-६-७८

हाय मां मैं रह न सकूं ।

एक स्त्री थी वह हर समय मुंह से बुरी बातें निकालती थी । उस के बच्चे उस से बहुत तंग थे । घर में एक शादी थी । उसको एक कमरे में बन्द कर दिया ताकि यह कोई बुरी बात न कहे । अन्त में जब लड़के को अभी सेहरा नहीं बांधा था तो उसने खिड़की से झांक कर कहा "इस के सिर का सेहरा तो फूंक दो" । वह विवश थी अपनी आदत नहीं छोड़ सकती थी । ऐसे ही मैं भी विवश होकर यह लिख रहा हूं ।

जब मैं सोचता हूं कि स्वप्न अवस्था के विचार इन्सान के शरीर पर प्रभाव डालते हैं, स्वप्न में किसी को मुक्का मारते हो तो तुम्हारा हाथ हिल जाता है,

डरते हो तो तुम्हारी जबान बड़बड़ाती है । तुम विचार से कोई स्त्री बना लेते हो तुम्हारा वीर्य निकल जाता है । तो मुझे यह सिद्ध हुआ कि विचार में बड़ी शक्ति है । जब स्वप्न के विचार जो हमारे बस में नहीं हैं वह शरीर पर प्रभाव डालते हैं तो इस समय जो द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, मत्सर का जो वातावरण है, कुर्सियों के लिए लड़ाई, घरेलू और राजनैतिक लड़ाई या महात्माओं में अपने लिए बढ़ाई और दूसरों के लिए बुराई, धार्मिक द्वेष आदि, यह भारतवर्ष को खा जायंगे अर्थात घातक सिद्ध होंगे । इस का परिणाम क्या हो यह मैं नहीं कह सकता मगर अच्छा नहीं होगा ।

मैं जानता हूं तूती की आवाज को नक्कारखाने में कोई नहीं सुनता मगर हाय मां ! मैं रह न सकू, अपनी आदत के वश में आकर यह लेख लिख रहा हू । आशा करता हूं कि देश के नेता, जनता पार्टी, कांग्रेस या अन्य महात्मा, हम शान्तिप्रिय और भोले भाले लोगों की जिन्दगियों के साथ न खेलें । छोटे आदमी का घृणा, द्वेष का विचार छोटा दायरा बनाता है, बड़े आदमियों के ग़लत विचार देश को हानि

पहुंचाते हैं। जिस तरह कौरवों और पाण्डवों की Cold war जब वे बच्चे थे तो उन के दिलों में द्वेष था जो बाद में महाभारत के युद्ध का रूप धारण कर गया। मुझे डर है कि इन वर्तमान लीडरों और पंथिक दुनियां वालों के घृणा और द्वेष के विचार बहुत बुरा परिणाम पैदा करेंगे।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि कोई हल है इस संकट (Crises) का ? है तो सही। मगर अमल में लाना कठिन है। जब से स्वराज्य मिला है मैं अपने विचार प्रकट करता हुआ आ रहा हूं कि वर्तमान प्रजातन्त्र में (System of Election) जो चुनाव प्रणाली है, यह एक मीठा ज़हर है। इस से देश का सारा वातावरण घृणा द्वेष और पक्षपात से दूषित हुआ है। जब तक (System of Election) बदलेगा नहीं वर्तमान विपत्तियां समाप्त नहीं होंगी। इस समय Autodemocracy की आवश्यकता है। Autodemocracy क्या है, यह मैं पहले कई बार बता चुका हूं।

सोचता हूं कि क्या कोई तेरी बात को सुनेगा ? नहीं ! हां, दुख और कष्ट उठाने के बाद शायद सोचें।

फिर मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तू क्यों चिन्ता करता है ? जो होना है होना है। मगर मैं क्या करूं। एक गीदड़ परवाना मेरे पीछे लगा हुआ है। दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज ने मुझे एक ख्याल दिया था :—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज तेरी उत्तम देही।
जग कल्यान जगत में आया परम दयाल स्नेही।

उन की आज्ञा के पालन में जगत कल्यान के ख्याल से आज अड़तीस वर्ष से यह काम कर रहा हूं।

'इन्सान बनो' की आवाज 15 अगस्त 1947 से उठाई। मालूम नहीं मेरे इस काम का परिणाम क्या हो मगर अपनी ओर से जो कर्तव्य दाता दयाल महर्षि जी महाराज ने मुझ पर लगाया है उस को पूरा करने के ख्याल से यह लेख प्रस्तुत करता हूं।

फकीर !

तमाम सत्संगी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि यदि मानवता मन्दिर निवासी अथवा कोई और उन से कोई वस्तु मांगे या पत्र द्वारा मंगवाये तो बिना पूछे हज़ूर परम दयाल जी महाराज हरगिज़ न दी जाये वरना वे आप जिम्मेदार होंगे।

सेक्रेटरी
मानवता मन्दिर

फकीर लायब्रेरी चैरी टेबल ट्रस्ट द्वारा बिना मूल्य बांटा जाने वाला साहित्य :-

1. मानव मन्दिर हिन्दी
2. अगम का भेद हिन्दी
3. Essence of Truth English.
5. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ । ਪੰਜਾਬੀ
5. संतमत लेखमाला भाग १ हिन्दी
6. संतमत लेखमाला भाग २ हिन्दी
7. Science of God Realisation English

मिलने का पता

सेक्रेट्री

मानवता मन्दिर

होशियारपुर ।

करबद्ध प्रार्थना

अपने कर्म के चक्कर में आकर कि मैं अपना अनुभव कह जाऊंगा और हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज की आज्ञानुसार कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा बदल जाना और हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज की आज्ञा कि निर्भय होकर काम कर जाओ, मैं आज ३५ साल से यह काम कर रहा हूं।

हमारी यह संस्था एक रजिस्टर्ड ट्रस्ट के अधीन है, कानून के अनुसार हम को जितना रुपया साल का आता है वो उसी साल में कम से कम ७५ प्रतिशत खर्च कर देना चाहिए। इसलिए मैंने फ्री प्रकाशन होम्योपैथिक, एलोपैथिक, आंखों और दान्तों के हस्पताल जारी किये। पिछले वर्ष हस्पतालों में ५५५३२ रुपये दो पैसे खर्च आया और फ्री प्रकाशन में ३३३३२ रुपये ९३ पैसे खर्च आया।

मानव मन्दिर पत्रिका पढ़ने वालों की संख्या २६०० हो गई है और लगातार बढ़ रही है मेरी आयु ९१ वर्ष की हो गई है। मुझ से अब अधिक सफर नहीं होता, इसलिये हाथ जोड़ कर प्रार्थना है,

कि जिन सज्जनों की मानव मन्दिर पत्रिका पढ़ने में रुची न हो वे इसे न मंगवावें और जो मंगवाते हैं अगर उनकी आत्मा गवाही देती है कि उनको इस पत्रिका से कुछ लाभ होता है तो वे कृपा करके मन्दिर की यथा शक्ति सहायता करें।

रह गया हस्पताल, जब तक चलेगा चलाऊंगा नहीं तो बन्द कर दूंगा।

मैंने यह काम अपनी नियत से बड़ी सच्चाई और निष्काम भाव से किया है। मैं यह जानता हूं कि दुनियां रोचक और भयानक बातों की तरफ ज्यादा झुकती है, फिर भी सच्चे मन से अपने कर्त्तव्य या कर्म को भोग कर इस संसार से जाना चाहता हूं।

हमारी संस्था में जनता के धन का उचित उपयोग होता है। मैं मानव मन्दिर मासिक पत्रिका का मूल्य रख देता किन्तु मैं ब्राह्मण होने के नाते अपने अनुभव को जो सारे जीवन के संघर्ष से प्राप्त किया है इसे बेचना नहीं चाहता। दान के रूप में जो इच्छा हो भेज सकते है।

फकीर !

अमरीका के दौरे के विषय में दो शब्द

मैं अमरीका जा रहा हूं। ९२ साल की उमर है सेहत भी इज़ाज़त नहीं देती है। अपनी आत्मा से पूछता हूं तू क्यों जाता है ? मेरे अपने कर्म हैं। मैंने प्रण किया था कि अपने जीवन के अनुभव बता जाऊंगा। यह प्रण करने का क्या कारण था ? संतों ने, कबीर आदि ने ऐसी ऐसी बाणियां लिखी हैं जिनमें सभी मतों का खण्डन है। मेरा विश्वास दाता पर था वह नहीं टूटा। मैंने प्रण किया था जो इस पंथ में चलने पर अनुभव होगा बता जाऊंगा। दूसरा कारण है दाता की आज्ञा थी चोला छोड़ने के पहले शिक्षा बदल जाना। एक कारण यह भी है कि मैंने बदकिस्मती से मानवता मंदिर बनाया। यह भी ख्याल है कि इस मंदिर को चलाने के लिए कुछ पैसा ले आऊंगा।

मैं हर मुमकिन ८ अक्तूबर तक दिल्ली वापस आकर दोपहर का सत्संग दूंगा। सेहत ठीक रही तो दोपहर के बाद हवाई जहाज़ से बनारस होकर धाम दातादयाल की समाधि पर मत्था टेक आऊंगा। वापसी पर कानपुर बनारस भी हवाई जहाज़ में जाऊंगा। कानपुर से मिश्रिक तीर्थ आदि होता हुआ बिलारी व सरसोहेड़ी होता हुआ शायद अक्तूबर के अन्तिम दिनों में होशियारपुरपहुंचजाऊं। तारीखों का फैसला सेहत पर निर्भर करता है अत: वक्त पर इत्तला दूंगा।

नोट :—लोग ज्यादातर मेरे दर्शनों के ख्वाहश मंद रहते हैं। मेरी आत्मा कहती है कि मैं किसी को कुछ नहीं देता। लोगों का अपना विश्वास है अपने ही विश्वास से मेरा रूप बनाकर पूजते हैं व उनकी मनोकामना पूर्ण होती है। मेरा रूप जाग्रत में स्वप्न में समाधि में प्रकट होकर दूसरों को लाभ पहुंचाता है रक्षा करता है, मगर मैं धर्म से कहता हूं कि मुझे कोई पता नहीं होता। यह सब जीव का अपना विश्वास या कर्म है। सिर्फ इस सच्चाई को बताने कि ऐ इंसान ! जो कुछ तुझे मिला

Place of Publication	Hoshiarpur
Date of Publication	10th of every month
Periodicity of Publication	Monthly
Printer's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpur
Publisher's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpur
Editor's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur.
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir or partners or shareholders, holding more than one percent of the total capital.	Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

I, M. R. Bhagat hereby decclare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated : 7-8-79 *Signature of Publisher*

Printed and Published by M. R. Bhagat at Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur. for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

printing by R.K Sood

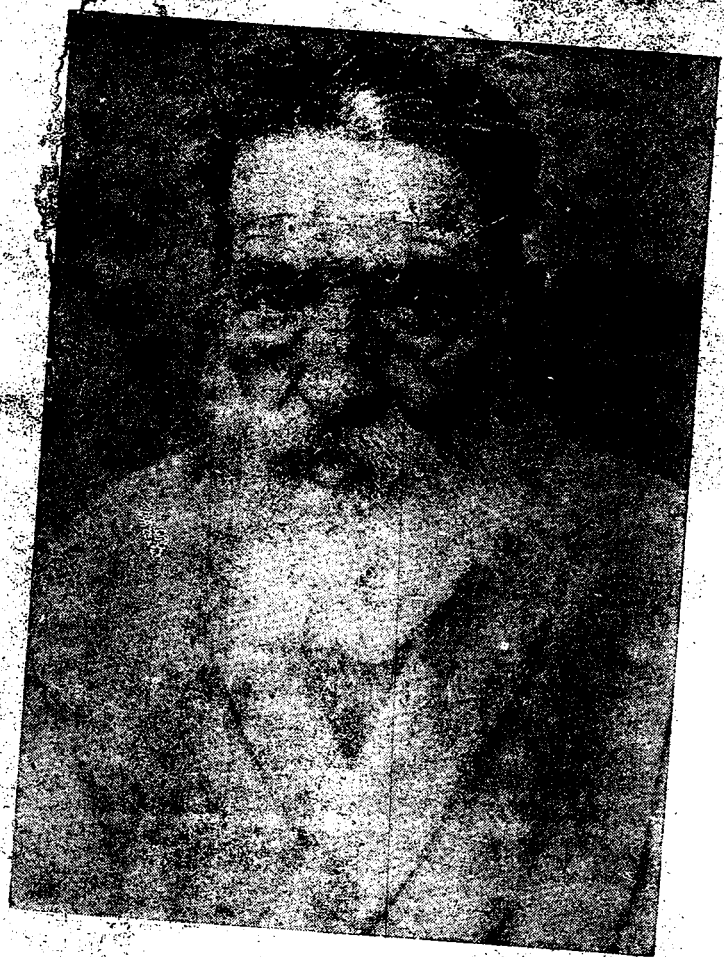

परमसन्त, परमदयाल
फकीर चन्द जी महाराज